सफ़र अर्ज़रूम का
(सन् 1829 के अभियान के दौरान)

प्रस्तावना

कुछ दिनों पूर्व मेरे हाथों में पिछले वर्ष सन् 1842 में पेरिस से प्रकाशित पुस्तक पड़ी, जिसका शीर्षक था, *फ्रांसीसी सरकार के आदेश पर आयोजित 'पूर्व की यात्राएँ'*। लेखक ने अपने मतानुसार सन् 1829 के अभियान का वर्णन करते हुए अपने निष्कर्षों को इस प्रकार समाप्त किया है :

> "अपनी कल्पना शक्ति के लिए प्रसिद्ध एक कवि को इन मशहूर कारनामों में, जिनका वह साक्षी था, व्यंग्य के लिए विषय मिला न कि कविता के लिए।"

तुर्की अभियान में उपस्थित कवियों में से मैं केवल ए. एस. खम्याकोव और ए. एन. मुराव्योव के बारे में ही जानता था। दोनों काउंट दीबिच की फ़ौज में थे। इनमें से पहले ने उस समय कुछ सुन्दर कविताएँ लिखीं, दूसरे ने तीर्थस्थलों की अपनी यात्रा का बहुत प्रभावशाली वर्णन किया है। मगर अर्ज़रूम-अभियान के बारे में कोई व्यंग्यात्मक रचना मैंने नहीं पढ़ी।

अगर उसी किताब में कॉकेशस पलटन के जनरलों के नामों के बीच अपना नाम न देखता तो मैं यह सोच भी नहीं सकता था कि बात यहाँ मेरे बारे में हो रही थी।

> "उसके (राजकुमार पास्केविच[1] की फ़ौज के) जनरलों में प्रमुख थे जनरल मुराव्योव...जॉर्जिया के राजकुमार चिचेवाद्ज़े...आर्मेनिया के राजकुमार बेबूतोव...राजकुमार पोत्योम्किन, जनरल रायेव्स्की; और अन्त में, महोदय पूश्किन....जो इसलिए राजधानी छोड़कर आये थे कि अपने देशवासियों की विजय के गीत गा सकें।"

---

1. पास्केविच इवान फ़्योदोरोविच (1782-1856)—तुर्की के साथ हुए युद्ध (1828-1829) में रूसी सेनाओं का नेतृत्व करनेवाले जनरल।

मानता हूँ कि फ्रांसीसी सैलानी की ये पंक्तियाँ, तमाम प्रशंसात्मक विशेषणों के बावजूद रूसी पत्रिकाओं की गालियों की अपेक्षा मुझे अधिक अपमानजनक लगीं। 'प्रेरणा ढूँढ़ने' को मैं बड़ी अटपटी एवं मूर्खतापूर्ण सनक मानता हूँ : प्रेरणा ढूँढ़ी नहीं जाती, वह स्वयं ही कवि को ढूँढ़ लेती है। भविष्य में होनेवाली विजय का यशगान गाने के लिए युद्ध में जाना, यह तो मेरे लिए एक ओर तो बड़े स्वाभिमान की, मगर दूसरी तरफ़ काफ़ी अनुचित बात होती।

मैं युद्ध सम्बन्धी निर्णयों में दख़ल नहीं देता। यह मेरा काम नहीं है। हो सकता है कि सगानलू पार करने का साहसिक कार्य, जिस कारनामे से काउंट पास्केविच ने तुर्की सेना के मुख्य कमांडर का ओस्मान पाशा से सम्बन्ध काट दिया, चौबीस घंटों के भीतर शत्रु सेना की दो बटालियनों की हार, अर्ज़रूम का अतिशीघ्र अभियान, सम्पूर्ण सफलता से मंडित यह सब, फ़ौजियों (जैसे कि उदाहरणार्थ, '*पूर्व की यात्रा*' के लेखक वाणिज्य दूत फोंतान्ये) की नज़रों में काफ़ी हास्यास्पद है, मगर मैं कट्टर जनरल पर व्यंग्य लिखने का साहस न करता, जिसने मेरा बड़े प्यार से अपने तम्बू में स्वागत किया था और अपनी सभी गहन चिन्ताओं के बीच स्नेहपूर्वक मेरा ध्यान रखने के लिए जो समय निकाला करता था। वह व्यक्ति, जिसे बलवानों की छत्रछाया की आवश्यकता नहीं है, उनके प्रेमपूर्ण स्वागत सत्कार का सम्मान करता है, क्योंकि अन्य किसी चीज़ की माँग नहीं कर सकता। कृतघ्नता के आरोप को निकृष्ट आलोचना या साहित्यिक गाली-गलौज़ की तरह बग़ैर विरोध प्रकट किये यूँ ही नहीं छोड़ा जा सकता।

इसीलिए मैंने इस प्रस्तावना को प्रकाशित करने का एवं 1829 के अभियान के बारे में, अपने द्वारा लिखे गये सभी यात्रा विवरणों को ज़ाहिर करने का निर्णय ले लिया—

1

मॉस्को से मैं कालुगा, बेल्येव और ओरेल गया और इस तरह अतिरिक्त दो सौ मीलों का चक्कर पड़ा; मगर इसके बदले मैंने एर्मोलोव[1] को देखा। वह ओरेल में रहता है, जिसके निकट उसका गाँव है। मैं उसके पास सुबह आठ बजे पहुँचा, मगर उसे घर पर नहीं पाया। मेरे गाड़ीवान ने मुझे बताया कि एर्मोलोव अपने सीधे-सादे धार्मिक पिता के अलावा और किसी के यहाँ नहीं जाता और शहरी अफ़सरों को अपने घर नहीं आने देता, अन्य सभी आज़ादी से उसके पास जा सकते हैं। घंटे भर बाद मैं फिर उसके यहाँ पहुँचा। एर्मोलोव ने अपने सहज स्नेह से मेरा स्वागत किया। पहली नज़र में मुझे उसमें उसकी तस्वीरों से कोई साम्य नज़र नहीं आया, जिनमें अक्सर उसका पार्श्व चित्रित किया गया था। चेहरा गोल, आग बरसाती भूरी आँखें, सफ़ेद खड़े बाल। हर्क्युलस के धड़ पर शेर का चेहरा था, मुस्कान अप्रिय लगी, क्योंकि स्वाभाविक नहीं थी। जब वह सोच में डूबा भौंहें सिकोड़ता है तो ख़ूबसूरत हो जाता है और दोव द्वारा चित्रित एक काव्यात्मक कृति की बरबस याद दिलाता है। वह हरा चेर्केसी लम्बा कुर्ता पहने था। उसके कमरे की दीवारों पर तलवारें और खंजर टँगे थे, जो कॉकेशस में उसके स्वामित्व के प्रतीक थे। ऐसा लग रहा था कि वह अपना निठल्लापन बड़े आराम से बर्दाश्त कर रहा है। उसने कई बार पास्केविच के बारे में बातें कीं जिनमें हर बार व्यंग्यात्मक कड़वाहट भरी थी; उसकी छोटी-मोटी जीतों के बारे में बातें करते हुए उसने नाविन से उसकी तुलना की, जिसके सामने तुरही की आवाज़ से ही दीवारें गिर जाया करती थीं और काउंट एरिवान्स्की को उसने काउंट एरिखोन्स्की का नाम दे दिया।

"उसे हमला करने दो।" एर्मोलोव ने कहा, "एक पाशा पर जो बेवक़ूफ़ हो, अकुशल हो, मगर सिर्फ़ ज़िद्दी हो, जैसे शूम्ल्या के पाशा पर—और समझो पास्केविच ख़त्म हो गया"।

मैंने एर्मोलोव को काउंट टॉलस्टॉय[2] के यह शब्द सुनाये, "कि पर्शिया के युद्ध

---

1. एर्मोलोव अलेक्सेइ पत्रोविच (1772-1861)—रूसी जनरल, सन् 1812 के युद्ध का हीरो। सन् 1816 से कॉकेशस में मुख्य सेनापति। सन् 1827 में ज़ार निकोलाइ-एक द्वारा उसे निवृत्त कर दिया गया और तब से वह अधिकांश समय अपनी ओर्लोव्स्की जागीर में ही बिताता था।
2. टॉलस्टॉय एफ. इ., जिसे 'अमेरिकन' कहा जाता था।

में पास्केविच ने इतना बढ़िया युद्ध किया कि किसी बुद्धिमान व्यक्ति को उससे अलग प्रतीत होने के लिए बुरे प्रदर्शन के अलावा कोई चारा ही न बचा।" एर्मोलोव मुस्कुराया, मगर सहमत नहीं हुआ।

"लोगों को और ख़र्चों को बचाया जा सकता था।" उसने कहा।

सोचता हूँ कि शायद वह अपने संस्मरण लिख रहा है या लिखना चाहता है। करामजिन का 'इतिहास' उसे पसन्द है, वह चाहता है कि वह ओजपूर्ण लेखनी रूसी प्रजा के परिवर्तन का चित्रण करे, नगण्यता से प्रसिद्धि और शक्तिशालिता की ओर। राजकुमार कूब्स्की के संस्मरणों के बारे में उसने बढ़-चढ़कर बातें कीं। जर्मनों को श्रेय मिला।

"पचास वर्ष बाद," उसने कहा, "लोग सोचेंगे कि इस अभियान में भी प्रशिया अथवा ऑस्ट्रिया की सहायक सेनाएँ थीं, जिनका संचालन फलाँ-फलाँ जर्मन जनरलों ने किया।" मैं उसके साथ दो घंटे रहा। उसे बड़ा अफ़सोस हो रहा था कि उसे मेरा पूरा नाम याद नहीं रहा। उसने तारीफ़ें करते हुए माफ़ी माँगी। बातचीत कई बार साहित्य तक पहुँची। ग्रिबोयेदोव की कविताओं के बारे में वह कहता है कि उनको पढ़ने से गालों के निकट की हड्डियों में दर्द होने लगता है। शासन और राजनीति के बारे में एक भी लफ़्ज़ नहीं कहा गया।

मेरा रास्ता कुर्स्क और खार्कोव से होकर जाता था, मगर मैं कुर्स्की होटल के बढ़िया खाने का त्याग करते हुए (जिसे हमारी यात्राओं में निठल्लापन नहीं कहा जाता) और खार्कोव विश्वविद्यालय को, जो कुर्स्की होटल से बढ़कर नहीं है, देखने में कोई दिलचस्पी न दिखाते हुए, तिफ़्लिसवाले सीधे रास्ते की ओर मुड़ गया।

येल्त्स तक रास्ते बड़े ख़तरनाक हैं। कई बार मेरी गाड़ी का पहिया कीचड़ में धँस गया, ओडेसा जैसे कीचड़वाले रास्ते पर चौबीस घंटों में मैं पचास मील से अधिक न जा सकता! आख़िरकार मैंने वोरोनेझ की स्तेपी को देखा और हरे-हरे मैदान में सरपट गाड़ी दौड़ाता रहा। नोवोचेर्कास्क में मुझे काउंट पूश्किन[1] मिले, जो तिफ़्लिस ही जा रहे थे और हमने साथ ही सफ़र करने का फ़ैसला किया।

यूरोप से एशिया में परिवर्तन हर घण्टे अधिकाधिक महसूस हो रहा था : जंगल लुप्त होते जा रहे हैं, पहाड़ियाँ समतल होती जा रही हैं, घास घनी होती जा रही है और शिद्दत से बढ़ती जा रही है; हमारे जंगलों में न देखे जानेवाले पंछी दिखाई देते हैं; राजमार्गों की ओर इंगित करनेवाले टीलों पर उकाब बैठे हैं, मानों चौकीदार हों, और गर्व से मुसाफ़िरों की ओर देख रहे हों; मेघाच्छादित चरागाहों पर—

---

1. काउंट पूश्किन—व्लादीमिर अलेक्सेयेविच मूसिन—पूश्किन (1798-1854) जो डिसेम्बर क्रान्तिकारियों की उत्तरी इकाई के सदस्य थे, क्रान्ति को कुचलने के बाद उन्हें गार्डों की टुकड़ी से हटाकर पीटर के फ़ौजी दस्ते में भेज दिया गया।

घोड़ियों के मनमौजी
विचरते गर्वीले झुंड।

काल्मीकी डाक चौकी की झोंपड़ियों के निकट ही बसे हुए हैं। उनके तम्बुओं के निकट ही ओर्लोव्स्की के सुन्दर चित्रों द्वारा आपके परिचित उनके बदसूरत, झबरे घोड़े चरा करते हैं।

हाल ही में मैं एक काल्मीकी तम्बू में गया था (सफ़ेद चन्दोवे से मढ़ी गुँथी टहनियों की बनी चौकोर जगह)। नाश्ते के लिए पूरा परिवार एकत्रित था। बीचोंबीच देगची उबल रही थी, और धुआँ तम्बू के ऊपर बने छेद में से बाहर निकल रहा था। एक जवान काल्मीक औरत, देखने में अच्छी भली, तम्बाकू के कश खींचते हुए सिलाई कर रही थी। मैं उसकी बग़ल में बैठ गया।

"तेरा नाम क्या है?"

XX

"तेरी उमर कितनी है?"

"दस और आठ।"

"क्या सी रही है?"

"पाजामा।"

"किसके लिए?"

"अपने लिए।"

उसने अपना पाइप मुझे पकड़ाया और नाश्ता करने लगी। देगची में भेड़ की चर्बी और नमक डली चाय उबल रही थी। उसने मुझे अपना प्याला पेश किया। मैं इनकार नहीं करना चाहता था और बग़ैर साँस लिए गटकने लगा। मुझे नहीं लगता कि किसी और क़बीले की रसोई इससे बदतर होगी। मैंने इसके साथ खाने के लिए कुछ माँगा। मुझे घोड़े के सुखाये गये मांस का टुकड़ा दिया गया; मैं इससे भी बहुत ख़ुश हो गया। काल्मीकों की चंचलता से मैं घबरा गया, मैं जल्दी से तम्बू से बाहर निकला और स्तेपी में स्थित त्सिर्त्सेया से निकला।

स्ताव्रोपोल में आसमान के छोर पर मुझे बादल दिखाई दिये, जिन्होंने ठीक नौ साल पूर्व मेरी नज़रों को आश्चर्यचकित किया था। वे वैसे ही थे, उसी जगह पर ये कॉकेशस शृंखला की हिमाच्छादित चोटियाँ हैं।

जोर्जियेव्स्क से मैं 'गर्याचिये वोदी'[1] गया। मुझे यहाँ काफ़ी परिवर्तन नज़र आया, हमारे ज़माने में गुसलख़ाने टूटी-फूटी, शीघ्रता से बनाई गयी झोंपड़ियों में हुआ करते थे। झरने, अक्सर अपने प्राकृतिक रूप में कल-कल करते, वाष्प उड़ाते पहाड़ों से विभिन्न दिशाओं में बहते, अपने साथ-साथ सफ़ेद और लाल निशान छोड़ जाते।

---

1. गर्याचिये वोदी—यहाँ गर्म पानी के झरने पाये जाते हैं।

हम काठ के प्यालों या टूटी बोतल के पेंदे से पानी भरा करते। आजकल आलीशान गुसलख़ाने और घर बन गये हैं। माशूक[1] की ढलान पर चीड़ के पेड़ों का गलियारा बनाया गया है। हर जगह साफ़-सुथरे रास्ते, हरी-हरी बेंचें, ख़ूबसूरत क्यारियाँ, पुल, मंडप हैं। झरने सँवार दिये गये हैं, पत्थरों से ढाँक दिये गये हैं, गुसलख़ानों की दीवारों पर पुलिस के नियम लिखे गये हैं, हर जगह सलीका, सफ़ाई, ख़ूबसूरती है...।

मानता हूँ : कॉकेशस के झरने आजकल काफ़ी सहूलियतें देते हैं, मगर मुझे उनके पुराने जंगली रूप के लिए अफ़सोस हुआ; मुझे टेढ़ी-मेढ़ी पथरीली पगडंडियों, झाड़ियों और खुली हुई खाइयों को याद करके दुःख होता है, जिनके ऊपर से मैं फिसल गया था। भारी मन से मैं 'वोदी' छोड़कर वापस जॉर्जियेव्स्क आया। जल्दी ही रात हो गयी। साफ़ आसमान लाखों सितारों से जगमगा रहा था। मैं पदकूमक[2] के किनारे-किनारे जा रहा था। यहाँ, मेरे साथ झरनों के संगीत को सुनते हुए ए. रायेव्स्की बैठा करता। भव्य बेश्तू[3] अपने अधीनस्थ पहाड़ों से घिरा हुआ, दूर, गहराता जा रहा था और अन्त में वह अँधेरे में गुम हो गया...

दूसरे दिन हम आगे की ओर चलकर एकातेरिनोग्राद पहुँचे, जो कभी हमारा उपनिवेश था।

एकातेरिनोग्राद से जॉर्जिया का सैनिक मार्ग आरम्भ होता है, राजमार्ग (डाकमार्ग) समाप्त हो जाता है। व्लादिकफ़काज़ तक किराये के घोड़ों पर जाते हैं। फिर कज़ाक टुकड़ी, पैदल सैनिक और एक तोप दी जाती है। डाक हफ़्ते में दो बार भेजी जाती है, और मुसाफ़िर उसी के साथ हो लेते हैं : इसे 'अकाजिया'[4] कहते हैं। हमने कुछ देर इन्तज़ार किया। डाक दूसरे दिन आयी और तीसरी सुबह को नौ बजे हम प्रस्थान करने के लिए तैयार थे। नियत स्थान पर लगभग पाँच सौ लोगों का पूरा कारवाँ जमा हो गया। ढोल बजाये गये। हम चल पड़े। आगे-आगे पैदल सिपाहियों से घिरी तोप जा रही थी। उसके पीछे एक क़िले से दूसरे में जानेवाले सिपाहियों की गाड़ियों, छकड़ों, बग्घियों की क़तार थी; उनके पीछे दो पहियोंवाली, माल लदी बैलगाड़ियाँ चरमरा रही थीं। दोनों ओर घोड़ों पर सवार चाबुकधारी निरीक्षक रोएँदार कोट पहने, रस्सी के फन्दे लिए चल रहे थे। यह सब मुझे पहले तो बहुत अच्छा लगा मगर शीघ्र ही मैं उकता गया। तोप एक-एक क़दम आगे बढ़ रही थी, मशाल सुलग रही थी और सिपाही उससे अपने-अपने पाइप सुलगा लेते। हमारे अभियान की धीमी गति (पहले दिन हम सिर्फ़ पन्द्रह मील चले), असहनीय गर्मी, रसद की कमी, बेचैन रैन बसेरे और चाबुकधारियों की गाड़ियों की निरन्तर चरमराहट ने मेरे सब्र का बाँध तोड़ दिया।

---

1. माशूक—पर्वत का नाम।
2. पदकूमक—कॉकेशस प्रान्त में स्थित पहाड़ी नदी।
3. बेश्तू—कॉकेशस शृंखला की एक पर्वत चोटी।
4. अकाजिया—अप्रत्याशित घटना/अवसर।

तातार लोग इस चरमराहट से बड़ा सम्मानित अनुभव करते, कहते कि वे ईमानदार आदमियों की भाँति जा रहे हैं, जिन्हें छिपने की कोई ज़रूरत नहीं है। इस बार इतने सम्मानित काफ़िले के साथ सफ़र न करना, मुझे ज़्यादा अच्छा लगता। रास्ता एक जैसा ही है : समतल; दोनों किनारों पर टीले। आसमान के छोर पर कॉकेशस की दिन प्रतिदिन ऊँची होती हुई चोटियाँ। क़िले, जो इन भागों में बहुतायत से थे, खाई से घिरे थे, जिन्हें हममें से हर कोई विना दौड़े फाँद सकता था, जंग लगी तोपों से लैस थे, जिन्हें काउंट गुदोविच के ज़माने से दाग़ा नहीं गया था, टूटी हुई दीवारों पर बत्तख़ों और मुर्ग़ियों के झुंड दौड़ रहे थे। क़िलों में कई जीर्ण-शीर्ण झोंपड़ियाँ थीं, जिनमें मुश्किल से दस अंडे और छाछ मिल सकता था।

पहली देखने योग्य जगह थी क़िला मिनारेत। इसके निकट पहुँचते हुए, हमारा काफ़िला चीड़ और चिनारों से भरे टीलों के बीच स्थित वादी से गुज़रा। ये हैजे से मरनेवाले हज़ारों लोगों की क़ब्रें हैं। संक्रमित खाक से रंग-बिरंगे फूल पैदा हुए थे। बायीं ओर बर्फ़ीला कॉकेशस दमक रहा था; सामने भव्य वनाच्छादित पर्वत आसमान से बातें कर रहा था; उसके पीछे स्थित था क़िला। उसके चारों ओर कभी 'बोल्शोय कबार्द' में तातार्तुब नामक नष्ट हुई मुख्य बस्ती के चिह्न नज़र आ रहे थे।

पतली, अकेली मीनार लुप्त हो चुकी बस्ती की कहानी कह रही थी। पत्थरों के ढेरों के बीच, सूखी हुई नदी के किनारे वह बड़ी ख़ूबसूरती से खड़ी थी। अन्दर की सीढ़ी अभी पूरी तरह नष्ट नहीं हुई थी। मैं उस पर चढ़कर ऊपर छत पर पहुँचा, जहाँ से अब किसी मुल्ला की अज़ान नहीं छूटती थी। वहाँ मुझे कुछ अपरिचित नाम दिखाई दिये, शोहरत से प्यार करनेवाले मुसाफ़िरों ने जिन्हें कबेलुओं पर खुरचा था।

हमारा रास्ता तस्वीर की तरह ख़ूबसूरत हो चला था। पहाड़ हमारे सिरों पर फैले थे। उनकी चोटियों पर मुश्किल से दिखाई देनेवाले जानवरों के झुंड नज़र आ रहे थे, जो कीड़े-मकोड़ों की तरह लग रहे थे। हमें गड़रिया भी दिखाई दिया, शायद वह कोई रूसी हो, कभी गिरफ़्तार किया गया हो, और ग़ुलामी में ही बुढ़ा गया हो। हमें और भी क़ब्रों के टीले तथा भग्नावशेष दिखाई दिये। दो-तीन स्मारक तो रास्ते के किनारे पर ही थे। वहाँ चेर्केसों[1] की प्रथानुसार, उनके घुड़सवार दफ़न थे। तातारी लिखावट, पत्थरों में उत्कीर्ण तलवार और ढाल, लुटेरे पूर्वजों की स्मृतियाँ छोड़ी गयी थीं लुटेरे पोतों के लिए।

चेर्केस हमसे घृणा करते हैं। हमने उन्हें खुले चरागाहों से खदेड़ दिया है; उनकी बस्तियाँ नष्ट हो गयी हैं, पूरे के पूरे क़बीले ख़त्म हो गये हैं। धीरे-धीरे वे पहाड़ों में छिप रहे हैं और वहाँ से अचानक हमला कर देते हैं। इन ख़ामोश चेर्केसों की दोस्ती का कोई भरोसा नहीं : वे हमेशा अपने ख़तरनाक हम क़बीलेवालों की मदद करने के

---

1. चेर्केस—रूस के चेर्केस स्वायत्त प्रान्त के निवासी।

लिए तैयार रहते हैं। उनकी दुस्साहसी आक्रामकता की आन-बान काफ़ी कम हो गयी है। अपने जितनी संख्या के कज़ाकों पर वह विरले ही हमला करते हैं, पैदल सेना पर तो कभी नहीं और तोप देखते ही भाग खड़े होते हैं। मगर किसी कमज़ोर टुकड़ी या असुरक्षित मुसाफ़िर पर हमला करने से कभी नहीं चूकते। इस प्रदेश में उनकी क्रूरता के क़िस्से मशहूर हैं। उन्हें शान्त करने का कोई तरीक़ा नहीं है, जब तक कि उन्हें बेहथियार नहीं कर दिया जाता, जैसे क्रीमिया के तातारों को बेहथियार किया गया था, जो कि बड़ा मुश्किल काम है, क्योंकि उनमें पीढ़ियों से दुश्मनी और ख़ूनी बदले की भावना चली आ रही है। खंजर और तलवार तो मानों उनके शरीर के अंग हैं, और बच्चा तुतलाने से भी पहले उन्हें सँभालना सीख जाता है। क़त्ल करना उनके लिए एक आसान-सी जिस्मानी हरकत है। क़ैदियों को वे धन पाने की आशा में सँभाले रखते हैं, मगर उससे बहुत ही वहशियाना बर्ताव करते हैं, उसे ताक़त से बाहर काम करने पर मजबूर करते हैं, खट्टा आटा खिलाते हैं, मारते हैं, जब जी चाहे, और उन पर पहरे के लिए बैठाते हैं बच्चों को, जो एक भी लफ़्ज़ के लिए अपनी छोटी-छोटी तलवारों से उनका काम तमाम करने के हक़दार होते हैं। हाल ही में एक ख़ामोश चेर्केस को पकड़ा गया, जिसने एक सिपाही पर गोली चलाई थी। उसने अपनी सफ़ाई देते हुए कहा कि उसकी बन्दूक़ काफ़ी दिनों से पड़ी-पड़ी जंग खा गयी थी। ऐसे लोगों का क्या किया जाए? मगर, फिर भी, उम्मीद की जा सकती है कि चेर्केसों के तुर्की के साथ व्यापार को काटकर, काले सागर के पूर्वी किनारे पर स्थापित किया गया आधिपत्य, उन्हें हमारे निकट आने पर मजबूर करेगा। शानोशौकत का प्रभाव उनके विद्रोह का दमन करने में प्रभावशाली होगा : समोवार का प्रचलन भी महत्त्वपूर्ण होगा। एक और भी तरीक़ा है—अधिक शक्तिशाली, अधिक नैतिक, हमारी सदी की शिक्षा के प्रसार के कारण अधिक मौलिक : बाइबिल का प्रचार। चेर्केसों ने अभी हाल ही में मोहम्मद के धर्म को (इस्लाम को) ग्रहण किया है। वे क़ुरान के जोशीले कट्टरपन्थी धर्मानुयायियों की ओर आकर्षित हुए, जिनमें प्रमुख था मन्सूर—एक असाधारण व्यक्ति, जो कफ़काज़ को रूसी आधिपत्य के ख़िलाफ़ काफ़ी लम्बे अर्से तक भड़काता रहा, अन्त में हमने उसे पकड़ लिया और वह सोलोवेत्स्की मॉनेस्ट्री में मर गया। कफ़काज़ को ईसाई मिशनरियों का इन्तज़ार है। मगर हमारे आलसी स्वभाव के होते हुए उन लोगों को जीवित शब्द के बदले मृत अक्षरों की गूँगी किताबें भेजना आसान रहेगा, जो निरक्षर हैं।

हम पर्वतों के प्रवेश-द्वार, व्लादीकाफ़काज़ पहुँचे, जो पहले काप्काय कहलाता था। यह ओसेतिनों की बस्तियों से घिरा है। मैं उनमें से एक बस्ती में घुसा और सीधे एक अन्तिम संस्कार में पहुँचा। एक साक्ल्या[1] के निकट भीड़ जमा थी। आँगन में चार

---

1. साकल्या—कफ़काज़ की पहाड़ियों के निवास को रूसी लोग 'साकल्या' कहते थे।

पहियोंवाली गाड़ी खड़ी थी, जिसमें दो साँड़ जुटे थे। मृतक के रिश्तेदार एवं मित्र सभी ओर से आ गये थे और वे अपना सिर पीटते हुए, रोते हुए साक्ल्या में जा रहे थे। औरतें चुपचाप खड़ी थीं। मृतक को लम्बा, ऊनी कोट पहनाकर बाहर लाया गया...

...कर रहा विश्राम योद्धा
अपने फ़ौजी कोट में,

उसे गाड़ी पर लिटाया गया। एक मेहमान ने मृतक की बन्दूक़ ली, और फूँक मारकर धूल हटाते हुए उसे मृत शरीर के निकट रख दिया। साँड़ चल पड़े। मेहमान पीछे-पीछे चलने लगे। मृत शरीर को बस्ती से कोई तीस मील दूर पहाड़ों में दफ़नाना था। अफ़सोस है कि कोई मुझे इन प्रथाओं का मतलब न समझा पाया।

कॉकेशस में रहनेवाले सभी लोगों में ओसेतिनी सबसे ग़रीब क़बीला है; उनकी औरतें बड़ी सुन्दर हैं, और सुनते हैं कि मुसाफ़िरों पर काफ़ी मेहरबान रहती हैं। क़िले के प्रवेश-द्वार पर मैं एक क़ैदी ओसेतिन की बीवी और लड़की से मिला। वे उसके लिए खाना लायी थीं। दोनों ही शान्त एवं बहादुर प्रतीत हुईं, हालाँकि मेरे निकट आने पर दोनों ने अपने सिर झुका लिए और अपनी फटी हुई चादरों में छिप गयीं। क़िले में मैंने चेर्केसों के अमानात[1] को, ख़ूबसूरत और शोख़ बालकों को देखा। वे हर घड़ी शरारत करते रहते हैं और क़िले से बाहर भाग जाते हैं। उन्हें बड़ी बुरी हालत में रखा जाता है। वे चीथड़ों में, अधनंगे और घृणित रूप से गन्दे घूमते हैं। किसी-किसी को तो मैंने पेड़ों की छाल पहने देखा। शायद, खुले छोड़े गये अमानाती, व्लादीकाफ़काज के अपने जीवन के बारे में अफ़सोस नहीं करते।

तोप ने अब हमारा साथ छोड़ दिया। हम पैदल सैनिकों और कज़ाकों के साथ आगे बढ़े। कॉकेशस ने हमें अपने आगोश में ले लिया। हमें कानों को बहरा कर देनेवाला शोर सुनाई दिया और हमने विभिन्न दिशाओं में बहते तेरेक[2] को देखा। हम उसके दायें किनारे पर चल रहे थे। उसकी शोर मचाती लहरें, ओसेतिनी मझोली पनचक्कियों के कुत्तों के घरों जैसे पहियों को घुमा रही थी। जैसे-जैसे हम पहाड़ों पर आगे बढ़ते रहे, दर्रा अधिकाधिक सँकरा होता गया। दबोचा गया तेरेक गरजते हुए अपनी धुआँधार लहरें, उसका रास्ता रोके खड़ी चट्टानों के ऊपर से फेंक रहा है। दर्रा उसके बहाव के मुताबिक़ बल खाता हुआ जा रहा है। पहाड़ों की तलहटी उसकी लहरों के कारण चिकनी हो गयी है। मैं पैदल जा रहा था, प्रकृति की उदास ख़ूबसूरती से चकित, हर क्षण रुकता हुआ। बदली छाई थी; काली चोटियों के इर्द-गिर्द घने बादल मँडरा रहे थे। तेरेक की ओर देखते हुए काउंट पूश्किन ओर शेर्नाव्ल को इमात्रा की याद आ गयी और उन्होंने उत्तर की ओर गरजनेवाली नदी को बेहतर बतलाया। मगर

---

1. अमानात—यहाँ बन्दी गुलामों से तात्पर्य है, जो स्वामी की अमानत होते थे।
2. तेरेक—कफ़काज़ का एक दरिया।

मैं अपने सामने उपस्थित दृश्य की किसी से भी तुलना न कर सका।

लार्सा तक पहुँचने के बदले मैं उन विशाल चट्टानों को, जिनके बीच से तेरेक एक अनबूझ आवेश के साथ बहती है, मग्न होकर देखता रहा और काफ़िले से पिछड़ गया। अचानक मेरी ओर एक सिपाही दौड़ा-दौड़ा आया और दूर से ही चीख़ा, "हुज़ूर, रुकिये मत, मार डालेंगे!" यह चेतावनी, अभ्यस्त न होने के कारण मुझे बड़ी अजीब लगी। बात यह है कि ओसेतिनी डाकू इस सँकरी जगह पर काफ़ी सुरक्षित हैं और मुसाफ़िरों पर गोलियाँ चलाते हैं। हमारे प्रस्थान की पिछली शाम को ही उन्होंने जनरल बेकोविच पर इसी तरह हमला किया था, जो उनकी गोलियों की बौछार के बीच घोड़ा दौड़ाता हुआ निकल गया था। चट्टान पर किसी महल के भग्नावशेष बिखरे थे; वे ओसेतिनों के साक्ल्या से यूँ अटे पड़े थे मानो अबाबीलों के घोंसले हों।

लार्सा में हम रात गुज़ारने के लिए रुके। यहाँ हमें एक फ्रांसीसी मुसाफ़िर मिला, जिसने हमें आगामी मार्ग से डरा दिया। उसने हमें गाड़ियों को कोबी में ही छोड़कर घोड़ों पर जाने की सलाह दी। उसके साथ *इलियाड* के नाच रंग को याद करते हुए हमने पहली बार कारवेतिया[1] की शराब पी बदबूदार मशक से :

चमड़े की थैलियों में है शराब, ख़ुशी हमारी!

यहाँ मुझे 'कफ़काज़ के क़ैदी' की गन्दी-सी नक़ल मिली और मानता हूँ मैंने उसे बड़ी प्रसन्नता से दुबारा पढ़ लिया। यह सब कमज़ोर, कमसिन, अधूरा है मगर काफ़ी कुछ सही-सही अन्दाज़ लगाते हुए वर्णित है।

दूसरे दिन सुबह-सुबह हम आगे बढ़े। तुर्क क़ैदी रास्ता ठीक-ठाक कर रहे थे। वे उन्हें दिये जानेवाले खाने की शिकायत कर रहे थे। रूसी काली रोटी की वे किसी भी तरह आदत नहीं डाल पा रहे थे। इस बात से मुझे मेरे मित्र शेरेमेत्येव के उन शब्दों की याद आ गयी, जो उसने पेरिस से लौटने पर कहे थे, "बुरा है भाई, पेरिस में रहना : खाने को कुछ नहीं, काली रोटी चाहने पर भी नहीं मिलती!"

लार्सा से सात मील दूर दारियाल चौकी है। दर्रे का भी वही नाम है। दोनों ओर चट्टानें समानान्तर दीवारों की भाँति खड़ी हैं। यह जगह इतनी सँकरी है, इतनी सँकरी है—एक मुसाफ़िर लिखता है, कि सँकरेपन को केवल देखा ही नहीं, अपितु महसूस भी किया जा सकता है। आसमान का टुकड़ा एक फ़ीते की तरह हमारे सिरों के ऊपर चमकता है। पहाड़ों की ऊँचाई से पतली और छींटें उड़ाती हुई जलधाराओं ने मुझे रेम्ब्राँ के विचित्र पेंटिंग, *गनिमेद की रहस्यमय चोरी,* की याद दिला दी। दर्रा भी उसी की पसन्द के अनुरूप आलोकित है। कहीं-कहीं तेरेक चट्टानों की तलहटी को धो देती है, और मार्ग में पत्थर यूँ बिखरे पड़े हैं, मानों कोई बाँध बना हो। चौकी से कुछ दूर नदी के दूसरे किनारे पर बड़े साहस से एक छोटा-सा पुल फेंका गया है। उस पर अगर

---

1. कारवेतिया—पूर्वी जॉर्जिया का ऐतिहासिक प्रान्त।

खड़े हों, तो ऐसा प्रतीत होता है, मानों पनचक्की पर खड़े हों। पूरा पुल हिचकोले खाता रहता है, और तेरेक यूँ शोर मचाती है, जैसे अनाज के दानों को आगे बढ़ाने वाले पहिये हों।

दारियाल के सामने एकदम सीधी खड़ी चट्टान पर किसी क़िले के भग्नावशेष हैं। कहते हैं कि उसमें कोई राजकुमारी दारिया छिपी थी, उसी ने दर्रे को अपना नाम दे दिया : क़िस्सा है। प्राचीन फ़ारसी भाषा में दारियाल का मतलब है—प्रवेश-द्वार। प्लीनी[1] के कथनानुसार, कफ़काज़ के द्वार जिन्हें ग़लती से कैस्पियन द्वार कहा जाता था, यहीं स्थित थे। दर्रा लकड़ी के, लोहे की पट्टियाँ जड़े वास्तविक द्वारों से बन्द किया गया है, उनके नीचे, प्लीनी लिखता है, दिरिओदोरिस नामक नदी बहती है। वहीं दुर्ग का निर्माण किया गया, जिससे जंगली क़बीलों के पलायन को रोका जा सके, इत्यादि। काउंट ई. पोतोव्स्की का सफ़रनामा देखिए, जिसकी वैज्ञानिक खोजें भी उतनी ही दिलचस्प हैं, जितने स्पेनिश उपन्यास।

दारियाल से हम कज़बेक की ओर चले। हमने त्रोइत्स्की द्वार देखा (कमान, जो चट्टान में किसी ज्वलनशील पदार्थ के विस्फोट के कारण निर्मित हुई है)—उनके नीचे कभी पगडंडी हुआ करती थी, और अब तेरेक बहती है, अक्सर अपना मार्ग बदलते हुए।

कज़बेक गाँव से कुछ दूर हमने पगली खाई को पार किया, यह खाई मूसलाधार बारिश में बदहवास नाले में परिवर्तित हो जाती है। मगर इस समय यह एकदम सूखी थी और सिर्फ़ नाम से ही बड़ी प्रतीत होती थी।

कज़बेक गाँव कज़बेक पर्वत की तलहटी में स्थित है, और राजकुमार कज़बेक की मिल्कियत है। राजकुमार, पैंतालीस वर्ष का व्यक्ति, क़द में भेस बदले हुए फ्लीगेलमैन से भी ऊँचा था। हमने उसे दुखान (जॉर्जियन ढाबे जो काफ़ी ख़स्ताहाल हैं और रूसी ढाबों से ज़्यादा साफ़-सुथरे नहीं हैं) में देखा। दरवाज़े में एक चमड़े का फूला हुआ थैला पड़ा था (बैल के चमड़े का), अपने चारों पैर फैलाये। उस भीमकाय व्यक्ति ने उसमें से चिखीर[2] निकाली और मुझसे कुछ सवाल पूछे, जिनका मैंने उसके पद एवं डील-डौल के अनुसार आदरपूर्वक उत्तर दिया। हम गहरे दोस्तों की तरह विदा हुए।

प्रभाव शीघ्र ही धुँधला होने लगता है। मुश्किल से एक दिन भी नहीं बीता था कि तेरेक की गरज और उसके बेतरतीब जलप्रपात, दर्रे और अन्य जलप्रपात भी अब मेरा ध्यान आकर्षित नहीं कर रहे थे। अब मुझ पर सिर्फ़ तिफ़िलिस पहुँचने की धुन सवार थी। मैं वैसी ही बेरुख़ी से कज़बेक के निकट से गुज़रा, जैसे कभी चतीर्दागा के

---

1. प्लीनी—(23-79)—रोमन लेखक एवं वैज्ञानिक, *सरल इतिहास* (37 भागों में) के रचयिता।
2. चिख़ीर—कफ़काज़ की घर में बनाई हुई लाल शराब।

निकट से जहाज़ में गया था। यह भी सच है कि बरसात और कोहरे के कारण मैं उसकी बर्फ़ीली चोटियाँ नहीं देख पा रहा था, जो कवि की कल्पना के अनुसार क्षितिज को सहारा दे रही थीं।

प्रशिया के राजकुमार का इन्तज़ार हो रहा था। कज़बेक से कुछ दूर हमारे सामने से कई गाड़ियाँ आयीं और सँकरे रास्ते में मुसीबत खड़ी कर दी। जब तक सब गाड़ियाँ गुज़रती रहीं, टुकड़ी के अफ़सर ने हमसे कहा कि वह दरबारी फ़ारसी कवि को साथ ले जा रहा है, और, मेरी ख़्वाहिश के मुताबिक़ उसने फ़ाज़िल ख़ान से मेरा तआर्रूफ करवाया। मैं, दुभाषिये की मदद से पूरबी अन्दाज़ में, बढ़ा-चढ़ाकर उसका स्वागत करना चाहता था : मगर जब फ़ाजिल ख़ान ने मेरे अनावश्यक मसखरेपन का जवाब एक समझदार आदमी की सीधी-सादी, बुद्धिमत्तापूर्ण, सौजन्यपूर्ण बातों से दिया तो मुझे बड़ी शर्म आयी! "उसे मुझसे पीटर्सबुर्ग में मिलने की आशा थी; उसे अफ़सोस है कि हमारी यह मुलाक़ात जारी नहीं रह सकती वग़ैरह।" शर्म के मारे मुझे मसख़रा अन्दाज़ छोड़कर साधारण यूरोपीय जुमलों की ओर लौटना पड़ा। यह सबक है हमारी रूसी उपहासात्मकता का। आगे से कभी भी किसी व्यक्ति का मूल्यांकन उसकी भेड़ की ख़ाल की टोपी और रंगे हुए नाख़ूनों को देखकर नहीं करूँगा।

कोबी चौकी क्रेस्तोवोय पर्वतों की ठीक तलहटी में स्थित है, जहाँ से हमें गुज़रना था। हम यहाँ रात गुज़ारने के लिए रुक गये और सोचने लगे कि यह भयानक काम कैसे पूरा किया जाए : क्या गाड़ियाँ छोड़कर कज़ाकों के घोड़ों पर बैठा जाए, या ओसेतिनों से बैल मँगवाये जाएँ। किसी भी परिस्थिति का सामना करने के लिए मैंने इस प्रान्त के प्रमुख चिल्यायेव महाशय को अपने पूरे कारवाँ की ओर से सरकारी निवेदन लिखा और हम घोड़ों के इन्तज़ार में सो गये।

दूसरे दिन क़रीब बारह बजे हमने शोरगुल एवं चीख़ें सुनीं और एक असाधारण दृश्य देखा : अधनंगे ओसेतिनियों के एक झुंड द्वारा हाँके जा रहे कमज़ोर, छोटे क़द के साँड़ों की 18 जोड़ियाँ बड़ी मुश्किल से मेरे मित्र ओ XX की हल्की गाड़ी खींच रहे थे। इस दृश्य ने मेरे सभी सन्देहों को काफ़ूर कर दिया। मैंने अपनी भारी पीटर्सबुर्ग वाली गाड़ी को व्लादीकाफ़काज़ भेजकर घोड़े से तिफ़्लिस जाने का निर्णय कर लिया। काउंट पूश्किन ने मेरा अनुकरण न करना चाहा। उसने साँड़ों के पूरे झुंड को हर तरह की रसद से भरी अपनी गाड़ी में जोतकर बर्फ़ीली पर्वत शृंखला ठाठ से पार करना ज़्यादा उचित समझा। हमने एक-दूसरे से विदा ली और मैं जनरल ओगारेव के साथ, जो स्थानीय मार्गों की देख-रेख करते थे, चल पड़ा।

रास्ता बर्फ़ीली चट्टानों के मध्य से होकर गुज़रता था, जो 1827 के जून के अन्त में खिसक गयी थी। ऐसी घटनाएँ अक्सर हर सात साल बाद हुआ करती हैं। विशाल चट्टान ने, गिरते हुए, दर्रे की पूरे एक मील की दूरी को ढाँक दिया था और तेरेक का रास्ता रोक दिया था। नीचे खड़े पहरेदारों ने भयानक गड़गड़ाहट की आवाज़ सुनी और

देखा कि नदी फ़ौरन उथली हो गयी और पन्द्रह मिनट बाद एकदम ख़ामोश होकर सूख गयी। तेरेक चट्टान को भेदकर पूरे दो घण्टे बाद पूरे वेग से बाहर निकली। आह ...कितनी भयावह थी वह!

हम सीधे ऊपर-ऊपर चढ़ते रहे। हमारे घोड़े भुरभुरी बर्फ़ से सने थे, जिनके नीचे नदियाँ शोर मचा रही थीं। मैंने अचरज से रास्ते को देखा और समझ न पाया कि गाड़ियों में यहाँ से गुज़रना कैसे सम्भव हो सकता है।

इसी समय मुझे कानों को बहरा कर देनेवाली गड़गड़ाहट सुनाई दी। "यह चट्टान खिसकी है," मुझसे ओगारेव महाशय ने कहा। मैंने चारों ओर नज़र दौड़ाई और वग़ल में बर्फ़ का ढेर देखा, जो बिखर रहा था और धीरे-धीरे ऊपर से नीचे खिसक रहा था। छोटी-छोटी चट्टान खिसकने की घटनाएँ यहाँ अक्सर होती रहती हैं। पिछले साल रूसी गाड़ीवान क्रेस्तोबोय पर्वत से गुज़र रहा था। चट्टान खिसकी; भयानक चट्टान उसकी गाड़ी पर गिरी, गाड़ी को, घोड़े को और गाड़ीवान को निगल गयी, रास्ते को पार करते हुए अपने शिकार के साथ खाई में लुढ़क गयी। हम पहाड़ की चोटी पर पहुँच गये। यहाँ ग्रेनाइट की सलीब गाड़ी गयी है, पुराना स्मारक, जिसकी मरम्मत एर्मोलोव ने की थी।

यहाँ मुसाफ़िर अक्सर गाड़ियों से उतरकर पैदल चलते हैं। कुछ ही दिन पहले एक विदेशी दूत यहाँ से गुज़रा; वह इतना कमज़ोर था कि उसने अपनी आँखों पर पट्टी वाँधने की आज्ञा दी; उसे हाथों का सहारा देकर ले जाया गया और जब उसकी आँखों से पट्टी खोली गयी तो उसने घुटनों के बल खड़े होकर ईश्वर को धन्यवाद दिया..., इससे उसे ले जानेवालों को बड़ा अचरज हुआ।

डरावने कफ़काज़ से सुन्दर जॉर्जिया में हुआ आकस्मिक परिवर्तन मनोहारी है। दक्षिण की हवा अचानक मुसाफ़िर को थपकियाँ देने लगती है। गूट पर्वतों से दिखाई देती है कायशूर्काया वादी, अपनी रिहाइशी चट्टानों, बग़ीचों, चाँदी के पट्टे जैसी चमकती, वलखाती अराग्वा समेत—और वह भी अत्यन्त छोटे आकार में, तीन मील गहरी खाई के तल में, जहाँ से बड़ा ख़तरनाक रास्ता गुज़रता है।

हम वादी में उतरे। जवाँ चाँद साफ़ आसमान में दिखाई दे रहा था। साँझ की हवा ख़ामोश और गर्माहट लिए थी। मैंने अराग्वा के किनारे चिल्यायेव महाशय के घर में रात बिताई। दूसरे दिन मैंने भले मेज़बान से विदा ली और आगे बढ़ा।

यहाँ जॉर्जिया आरम्भ होता है। ख़ुशनुमा अराग्वा से सींची गयी प्रकाशमान वादियों ने उदास दर्रों और भयानक तेरेक का स्थान ले लिया। नंगी ऊँची-ऊँची चट्टानों के बदले मैंने अपने चारों ओर हरे-हरे पहाड़ और फलोंवाले पेड़ देखे। पानी के नल शिक्षा के प्रसार को प्रमाणित कर रहे थे। उनमें से एक ने तो मुझे पूरी तरह से दृष्टि भ्रम में डाल दिया : पानी का बहाव ऐसा लगता है, पहाड़ों पर नीचे से ऊपर की ओर होता है।

पायसानौर में मैं घोड़े बदलने के लिए रुका। यहाँ मैं फ़ारसी राजकुमार के साथ जा रहे रूसी अफ़सर से मिला। जल्दी ही मैंने घंटियों की आवाज़ सुनी और एक-दूसरे से बँधे एशियाई पद्धति से गठरियाँ लादे खच्चरों की एक पूरी क़तार रास्ते पर धीरे-धीरे चलती दिखाई दी। घोड़ों की राह न देखकर मैं पैदल ही चल पड़ा; और अनानूर से आधा मील दूर, रास्ते के मोड़ पर खोज़्रेव मिर्ज़ा से मिला। उसकी गाड़ियाँ खड़ी थीं। स्वयं उसने अपनी बग्घी से सिर बाहर निकालकर देखा और मेरा अभिवादन किया। हमारी मुलाक़ात के कुछ घंटों बाद राजकुमार पर पहाड़ी लुटेरे टूट पड़े। गोलियों की सनसनाहट सुनते ही, खोज़्रेव मिर्ज़ा अपनी बग्घी से बाहर कूदा, घोड़े पर बैठ गया और सरपट भागा। उसके निकट खड़े रूसी उसकी बहादुरी से भौंचक्के रह गये। बात यह थी कि युवा एशियाई, जिसे बग्घी की आदत नहीं थी, उसे आश्रय के बदले फ़न्दा समझता था।

मैं अनानूर तक पहुँचा, थकान महसूस किये बग़ैर। मेरे घोड़े आये नहीं थे। मुझे बताया गया कि दुशेत शहर तक दस मील से ज़्यादा दूरी नहीं है और मैं फिर से पैदल चल पड़ा। मगर मैं न जानता था कि रास्ता पहाड़ों से होकर गुज़रता है। ये दस मील पूरे बीस के समान हो गये।

शाम हो गयी; मैं आगे बढ़ता रहा, ऊँचाई पर चढ़ता रहा। रास्ता भटक जाना सम्भव नहीं था; मगर जगह-जगह झरनों के कारण बने मिट्टी के कीचड़ में मैं घुटनों तक धँस जाता। मैं पूरी तरह थक गया। अँधेरा बढ़ता जा रहा था। मैंने कुत्तों का रोना और भौंकना सुना और मैं यह सोचकर ख़ुश हो गया कि शहर नज़दीक ही है। मगर मैं ग़लत था; जॉर्जियाई गड़रियों के कुत्ते भौंक रहे थे और उस प्रान्त में पाये जाने वाले जंगली जानवर, सियार रो रहे थे। मैंने अपनी बेसब्री को ख़ूब कोसा, मगर कुछ किया भी नहीं जा सकता था। आख़िरकार मुझे रोशनियाँ दिखाई दीं और क़रीब आधी रात को मैं वृक्षों से घिरे घरों के निकट पहुँचा। रास्ते में मिलनेवाले पहले आदमी ने मुझे मुखिया तक ले जाने का वादा किया और इसके बदले मुझसे बख़्शीश माँगी।

मुखिया जॉर्जिया का बूढ़ा अफ़सर था, उसके यहाँ मेरे आगमन ने काफ़ी हलचल मचा दी। मैंने माँग की, पहली कमरे की, जहाँ मैं कपड़े बदल सकूँ; दूसरी, एक गिलास शराब की; तीसरी, मुझे यहाँ लाकर छोड़नेवाले के लिए अबाज़ की। मुखिया को मालूम नहीं था कि मुझसे कैसे पेश आये, और वह मुझे अविश्वास से देखता रहा। यह देखकर कि उसे मेरी माँगें पूरी करने की कोई जल्दी नहीं थी, मैं उसके सामने ही कपड़े बदलने लगा, इस शानदार आज़ादख़याली की माफ़ी माँगते हुए। सौभाग्यवश मुझे जेब में अपना सफ़रनामा मिल गया, जो यह सिद्ध करता था कि मैं कोई रिनाल्डो रिनाल्डिनी नहीं, बल्कि एक शान्तिप्रिय मुसाफ़िर हूँ। इस ख़ुशनुमा दस्तावेज़ ने फ़ौरन अपना असर दिखाना शुरू कर दिया : मुझे कमरा दे दिया गया, शराब का गिलास

लाया गया और मेरे पथप्रदर्शक को, जॉर्जियन आतिथ्य के लिए शर्मनाक उसके लालच के लिए, डाँट पिलाते हुए, बख़्शीश दे दी गयी। मैं दीवान पर पसर गया इस उम्मीद के साथ कि अपने कारनामे के बाद घोड़े बेचकर सोऊँगा : मगर यह तो क़िस्मत में ही नहीं था! पिस्सुओं ने, जो सियारों से भी काफ़ी ख़तरनाक होते हैं, मुझ पर हमला बोल दिया और पूरी रात मुझे चैन न लेने दिया। सुबह मेरे पास मेरा आदमी आकर बोला कि काउंट पूश्किन साँड़ोंवाली गाड़ी पर बर्फ़ीले पहाड़ सकुशल पार कर दुशेत पहुँच गये हैं। मुझे शीघ्रता करनी चाहिए थी। ग्राफ पूश्किन और शैर्नोव्ल मेरे पास आये और साथ ही रवाना होने का आग्रह किया। मैंने इस ख़ुशनुमा ख़याल से दुशेत छोड़ा कि रात तिफ़्लिस में बिताऊँगा।

रास्ता वैसे ही मनोहर और तस्वीर की तरह था, हालाँकि रिहायशी बस्तियाँ विरले ही दिखाई दीं। गार्सिस्काल से कुछ मील दूर कुरा से होते हुए हम प्राचीन पुल से गुज़रे, जो रोमन चढ़ाइयों की यादगार था और घोड़े को बेतहाशा भगाते हुए, कभी सरपट चलते हुए, हम तिफ़्लिस की ओर आये, जहाँ बिना किसी का ध्यान आकर्षित किये रात के क़रीब ग्यारह बजे पहुँचे।

2

मैं एक सराय में रुक गया, दूसरे दिन तिफ़्लिस के सुन्दर हम्मामों की ओर चला। शहर मुझे घनी आबादीवाला लगा। एशियाई निर्माण और बाज़ार मुझे किशिनेव की याद दिला गये। सँकरे और टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर गधे, पीठ पर दोनों ओर टोकरियाँ लादे भाग रहे थे; वैलगाड़ियाँ रास्ता रोक रही थीं। टेढ़े-मेढ़े चौक पर आर्मेनियाइयों जॉर्जियाइयों, चेर्केसियों और फ़ारसियों की भीड़ थी; उन्हीं के बीच में नौजवान रूसी कर्मचारी करावाख के घोड़ों पर सवार चल रहे थे। हम्माम के दरवाज़े पर बूढ़ा फ़ारसी मालिक बैठा था। उसने मेरे लिए दरवाज़ा खोला, मैं एक लम्बे-चौड़े कमरे में दाख़िल हुआ और वहाँ क्या देखा? पचास से अधिक औरतें, बूढ़ी और जवान, आधे कपड़े पहने हुए या बिलकुल वस्त्रहीन, खड़े-खड़े या बैठकर कपड़े उतार रही थीं, दीवारों से सटी बेंचों पर कपड़े पहन रही थीं। मैं रुक गया।

"चलो, चलो।" मालिक ने मुझसे कहा, "आज मंगल है : औरतों का दिन। कोई बात नहीं, अफ़सोस की बात नहीं।"

"बेशक़, अफ़सोस की बात नहीं," मैंने उसे जवाब दिया, "उल्टी बात है।"

आदमियों के प्रकट होने से वहाँ कोई भी असर नहीं पड़ा। वे आपस में बातचीत और हँसी मज़ाक़ करती रहीं। एक भी औरत अपनी चादर में छिपने के लिए नहीं भागी, एक ने भी कपड़े उतारना बन्द नहीं किया। ऐसा लगा, मानों मैं अदृश्य

रूप से वहाँ घुसा था। उनमें से कई सचमुच ख़ूबसूरत थीं और टी. मूर के वर्णन को सच सावित करती थीं :

युवती ख़ूबसूरत जॉर्जियन
चटख लाली, ताजा चमक लिए
युवतियों जैसी अपने देस की
निकलती तरोताज़ा तिफ़िलिसी हम्माम से।

—लाला रुख़

मगर जॉर्जियन बूढ़ियों जैसी घृणित कोई चीज़ मैंने अब तक नहीं देखी है : वे चुड़ैलें हैं।

फ़ारसी मुझे हम्माम में ले गया : गर्म, गन्धक-लोहे के पानी का सोता एक गहरे, चट्टान को काटकर बनाये गये एक गहरे हौज में गिर रहा था। आज तक मैंने न रूस में, न तुर्की में तिफ़िलिसी हम्माम जैसी ठाठ-बाट वाली आरामदेह चीज़ देखी है। उसके बारे में विस्तार से लिखूँगा।

मालिक ने मुझे हम्मामी-तातार के हवाले कर दिया। मुझे मानना पड़ेगा कि वह बग़ैर नाक के था; इससे उसके अपने काम में उस्ताद होने में कोई रुकावट नहीं होती थी। हसन (यह बिना नाकवाले तातार का नाम था) ने सबसे पहले मुझे पत्थरों के गर्म फ़र्श पर लिटा दिया; इसके बाद उसने मेरी उँगलियाँ चटखाना शुरू कर दिया, अंग-अंग खींचने लगा, मुझे पूरी ताक़त से मुक्कों से मारने लगा; मुझे ज़रा भी दर्द महसूस न हुआ, बल्कि आश्चर्यजनक रूप से हल्कापन महसूस हुआ। (एशियाई हम्मामी कभी-कभी बड़े जोश में आ जाते हैं, आपके कन्धों पर उछलकर चढ़ जाते हैं, पैरों से नितम्बों पर फिसलते हैं और पीठ पर उछलते कूदते हैं, लाजवाब है) इसके बाद वह बड़ी देर तक ऊनी दस्ताने से मेरा बदन पोंछता रहा और पूरी ताक़त से गरम पानी छिड़ककर, कुप्पी से साबुन छिड़के तौलिए से धोता रहा। इस एहसास को समझाया नहीं जा सकता : गरम साबुन हवा की तरह आपको धोता है। ऊनी दस्ताने और कुप्पी से साबुन छिड़के तौलिए का इस्तेमाल रूसी हम्माम में भी होना चाहिए : शौकीन लोग इस नयी चीज़ के इस्तेमाल के लिए शुक्रगुज़ार होंगे।

इसके बाद हसन ने मुझे हौज में डाल दिया, इसी के साथ यह समारोह समाप्त हुआ।

तिफ़िलिस में मुझे रायेव्स्की से मिलने की उम्मीद थी, मगर यह जानकर कि उसकी टुकड़ी कूच कर चुकी है, मैंने काउंट पास्केविच से फ़ौज में आने की अनुमति लेने का इरादा कर लिया।

तिफ़िलिस में मैं क़रीब दो हफ़्ते रहा और वहाँ के समाज से मिला 'तिफ़िलिस की ख़बरें' के सम्पादक सांकेविच ने मुझे इस प्रान्त के बारे में, राजकुमार त्सित्सिआनोव

के बारे में, ए.पी. एर्मोलोव आदि के बारे में काफ़ी दिलचस्प बातें बतलाईं। सांकेविच को जॉर्जिया से प्यार है और वह उसके उज्ज्वल भविष्य की कल्पना करता है।

जॉर्जिया सन् 1783 में रूस की छत्रछाया में आया, मगर इससे पराक्रमी आगा मोहम्मद को तिफ़्लिस को जीतने और लूटने में और बीस हज़ार लोगों को बन्दी बनाकर ले जाने में कोई कठिनाई नहीं हुई (सन् 1795 में)। जॉर्जिया सम्राट अलेक्सान्द्र के शाही दंड के नीचे सन् 1802 में आ गया। जॉर्जियन लोग लड़ाकू हैं। हमारे झंडे के नीचे वे अपने शौर्य का प्रदर्शन कर चुके हैं। उनकी बौद्धिक योग्यता को उच्च शिक्षा का इन्तज़ार है। स्वभाव से वे ख़ुशमिज़ाज और मिल-जुलकर रहनेवाले होते हैं। मर्द त्यौहारों पर पीते हैं और सड़कों पर घूमते हैं। काली आँखोंवाले बच्चे गाते हैं, फुदकते हैं और गुलाँटे मारते हैं, औरतें लेज़्गींका[1] नृत्य करती हैं।

जॉर्जियाई गीतों के शब्द बड़े प्यारे हैं। मुझे एक गीत का शब्दशः अनुवाद सुनाया गया; शायद वह हाल ही में रचा गया है; उसमें कुछ पूरबी निरर्थकता का अन्दाज़ है, जिसका अपना एक काव्यात्मक गुण है। यह रहा वह गीत :

"रूह, अभी अभी पैदा हुई जन्नत में! रूह, बनाई गई मेरी ख़ुशी के लिए!
तुझसे, ओ अमर आत्मा, ज़िन्दगी की आस है।
तुझसे, ओ बहार बसन्ती, पूनम के चाँद, तुझसे, मेरे रक्षक फ़रिश्ते,
तुझसे ज़िन्दगी की आस है।
चेहरा तेरा दमकता और मुस्कान देती ख़ुशी। दुनिया को पाने की नहीं ख़्वाहिश;
आस है तेरी निगाहों की। तुझसे, ज़िन्दगी की आस है।
पहाड़ी गुलाब, ओस से पुलकित! प्रकृति के प्रिय प्रीतम!
ख़ामोश, छिपे हुए ख़ज़ाने! तुझसे ज़िन्दगी की आस है।"

जॉर्जियाई हमारी तरह नहीं पीते और आश्चर्यजनक रूप से इस मामले में दृढ़ होते हैं। उनकी शराब बाहर नहीं ले जाई जा सकती और जल्दी से सड़ जाती है, मगर वहीं पर बड़ी बढ़िया रहती है। काखेतिन और कराबाख की शराब काफ़ी महँगी होती है। शराब को मरानों में, विशाल सुराहियों में, ज़मीन में गाड़कर रखा जाता है। उन्हें समारोहपूर्वक खोला जाता है। कुछ दिन पहले एक रूसी सैनिक ने, चुपचाप ऐसी एक सुराही को खोला, जिसमें गिरकर काख़ेतिनी शराब में डूबकर मर गया, जिस प्रकार अभागा क्लेरेन्स[2] शराब के पीपे में डूबा था।

तिफ़्लिस कूरा नदी के किनारे पर पथरीले पहाड़ों से घिरी वादी में स्थित है, वे चारों ओर से इसे हवाओं से ढाँक कर रखते हैं, और धूप में तप कर, ठहरी हुई हवा

---

1. लेज़्गींका—कॉकेशस का तीव्र गति वाला लोक-नृत्य।
2. क्लेरेन्स—अंग्रेज़ी ड्यूक, जिसे उसके भाई सम्राट् एडवर्ड IV ने शराब के पीपे में डुबोकर मार डाला था (सन् 1478 में)।

को गर्माते नहीं, बल्कि उबाल देते हैं। यही कारण है असहनीय गर्मी का, जो तिफ़िलिस में होती है, बावजूद इसके कि तिफ़िलिस इकतालीस डिग्री अक्षांश पर ही स्थित है। उसके नाम (त्बिलिसकलार) का मतलब ही है—'गर्म शहर'।

शहर का अधिकांश भाग एशियाई तरीक़े से बनाया गया है : घर कम ऊँचाई के, छतें समतल। उत्तरी भाग में यूरोपीय वास्तुकला के अनुसार ऊँचे घर बन रहे हैं, और उनके निकट ठीक-ठाक (चौकोर) चौक बनाये जा रहे हैं। बाज़ार अनेक क़तारों में बँटा है; दुकानें तुर्क और फ़ारसी माल से अटी पड़ी हैं, जो आमतौर पर फैल रही महँगाई के हिसाब से काफ़ी सस्ता है। तिफ़िलिसी हथियारों की सारे पूरब में बड़ी क़द्र है। ग्राफ़ सामोयलोव और वी, जिन्हें यहाँ भीमकाय पराक्रमी माना जाता था, अक्सर अपनी नयी तलवारों की जाँच एक ही वार में मेढ़े को दो टुकड़ों में काटकर या साँड़ का सिर काटकर किया करते थे।

तिफ़िलिस की आबादी का अधिकांश भाग अर्मेनियाइयों का है : सन् 1825 में उनके यहाँ 2500 परिवार थे। वर्तमान युद्धों के दौरान उनकी संख्या और भी बढ़ गयी है। लगभग 1500 जॉर्जियन परिवार हैं। रूसी अपने आपको यहाँ का निवासी नहीं मानते। फ़ौजी, कर्त्तव्य का पालन करते हुए, जॉर्जिया में रहते हैं, क्योंकि उन्हें वैसी आज्ञा दी गयी है। नौजवान सरकारी अफ़सर यहाँ असेस्सर[1] बनकर आते हैं, जिसके लिए कुछ लोग लालायित रहते हैं। सभी जॉर्जिया को एक ज़बर्दस्ती का पड़ाव समझते हैं।

कहते हैं कि तिफ़िलिस की आबोहवा सेहत के लिए अच्छी नहीं है। यहाँ के सरसाम भयानक होते हैं : इनका पारे से इलाज किया जाता है, जिसका प्रयोग गर्मी के कारण हानिकारक नहीं होता। डॉक्टर अपने मरीज़ों को बग़ैर किसी परेशानी के पारे की गोलियाँ खिलाते हैं। जनरल सिप्यागिन, कहते हैं कि इसलिए मर गया, क्योंकि उसका निजी डॉक्टर जो उसके साथ पीटर्सबुर्ग से आया था, स्थानीय चिकित्सकों द्वारा सुझाई गयी दवा से डर गया और उसने मरीज़ को वे दवाएँ नहीं दीं। यहाँ के बुख़ार क्रीमिया के और मल्दाविया के बुख़ारों जैसे ही होते हैं और उसी तरह से उनका इलाज किया जाता है।

यहाँ के निवासी कूरा का मटमैला, मगर स्वादिष्ट पानी पीते हैं। सभी सोतों और कुओं के जल में गन्धक की मात्रा काफ़ी ज़्यादा होती है। मगर शराब का यहाँ इतना अधिक प्रयोग किया जाता है कि पानी की कमी अगर हो भी जाए, तो पता न चले।

तिफ़िलिस में मुद्रा के सस्ते मूल्य ने मुझे हैरान कर दिया। गाड़ी में दो रास्ते पार करके, क़रीब आधे घंटे बाद गाड़ी से उतरने के बाद मुझे चाँदी के दो रूबल देने पड़े।

---

1. असेस्सर—त्सारशाही रूस में आठवीं श्रेणी का सरकारी कर्मचारी।

पहले मैंने सोचा कि वह नवागन्तुक के अज्ञान का फ़ायदा उठाना चाहता है; मगर मुझे बताया गया कि वही असली दर है। और चीज़ें भी इसी अनुपात में महँगी हैं।

हम जर्मन बस्ती गये और वहाँ खाना खाया। वहीं तैयार की गयी बियर पी, जिसका स्वाद बहुत बुरा था और बहुत बुरे भोजन के लिए बहुत ज़्यादा क़ीमत चुकाई। मेरी सराय में भी इसी तरह की महँगी बकवास खिलाई गयी। बढ़िया खाने के शौक़ीन जनरल स्त्रेकालोव ने एक बार मुझे खाने पर बुलाया; मगर अफ़सोस उसके पास व्यंजन पद के हिसाब से परोसे जाते थे, और जो मेज़ पर अंग्रेज़ अफ़सर जनरल का चिह्न लगाये बैठे थे। नौकर इतने उत्साह से मेरे क़रीब से गुज़र जाते थे कि मैं मेज़ से भूखा ही उठा। शैतान ले जाए तिफ़िलिस के खाने के शौक़ीन को!

मैं बड़ी बेताबी से अपनी क़िस्मत के फ़ैसले का इन्तज़ार कर रहा था। आख़िरकार मुझे रायेव्स्की का ख़त मिला। उसने लिखा था कि मैं जल्दी से कार्स पहुँच जाऊँ, क्योंकि कुछ दिनों बाद फ़ौजें आगे जानेवाली थीं। मैं दूसरे ही दिन निकल पड़ा।

मैं घोड़े पर जा रहा था, कफ़क्राज की चौकियों पर हर बार घोड़ा बदलते हुए। मेरी चारों ओर की धरती गर्मी के कारण झुलसी हुई थी। जॉर्जिया के गाँव मुझे दूर से ख़ूबसूरत बाग़ों जैसे दिखाई देते, मगर नज़दीक पहुँचने पर कुछेक दयनीय साक्ल्या, धूलभरे चिनारों से घिरे नज़र आते। सूरज डूब चुका था, मगर हवा अभी भी दमघोंटू थी :

रातें गर्म!
सितारे अजनबी!...

चाँद चमक रहा था; हर चीज़ ख़ामोश थी; रात के सन्नाटे में बस मेरे घोड़े की टापों की आवाज़ गूँज रही थी। किसी आवास के निशान न पाकर मैं काफ़ी देर तक चलता रहा। आख़िरकार मुझे एक अकेली साक्ल्या दिखाई दी। मैं दरवाज़ा खटखटाने लगा। मालिक बाहर आया। मैंने पहले रूसी में और फिर तातारी ज़ुबान में पानी माँगा। वह मुझे समझ न पाया। ग़ज़ब की लापरवाही! तिफ़िलिस से तीस मील दूर है, और पर्शिया और तुर्की के रास्ते पर होते हुए भी वह न तो रूसी जानता था, न तातारी।

कज़ाक चौकी पर रात बिताने के बाद मैं सुबह-सुबह आगे चल पड़ा। रास्ता पहाड़ों और जंगलों से होकर जाता था। मुझे तातार मुसाफ़िर मिले; उनमें कुछ औरतें भी थीं। वे घोड़ों पर चादरें ओढ़े बैठी थीं; उनकी सिर्फ़ आँखें और एड़ियाँ ही नज़र आ रही थीं।

मैं बेज़ोब्दाल पर्वत पर चढ़ने लगा, जो जॉर्जिया को प्राचीन आर्मेनिया से अलग करता है। चौड़ा रास्ता, जिसके किनारों पर पेड़ लगे हैं, पहाड़ के नज़दीक से वल खाता हुआ जाता है। बेज़ोब्दाल की चोटी पर मैं एक छोटे-से दर्रे से होकर गुज़रा, जिसे शायद 'भेड़ियों का द्वार' कहते हैं, और जॉर्जिया की वास्तविक सीमा पर पहुँच गया।

मेरे सामने थे नये पहाड़, नया क्षितिज; मेरे नीचे मदहोश करने वाले हरे-हरे खेत फैले थे। मैंने फिर से एक बार झुलसे हुए जॉर्जिया को देखा और पहाड़ की ढलान से नीचे उतरने लगा, आर्मेनिया के ताज़ातरीन मैदानों की ओर। अवर्णनीय प्रसन्नता से मैंने महसूस किया कि गर्मी एकदम कम हो गयी है : आबोहवा एकदम बदल गयी थी।

बोझ लदे घोड़ों के साथ चल रहा मेरा आदमी मुझसे पिछड़ गया। फूले-फले निर्जन क्षेत्र में, जो दूरस्थ पहाड़ों से घिरा था, मैं अकेला चला जा रहा था। खोया-खोया-सा मैं चौकी के सामने से आगे निकल गया, जहाँ मुझे घोड़े बदलने थे। छह घंटों से अधिक समय बीत गया और मैं अगली चौकी तक की दूरी के बारे में आश्चर्य करने लगा। एक ओर मुझे पत्थरों के ढेर दिखाई दिये, जो साक्ल्या जैसे प्रतीत हो रहे थे और मैं उनकी ओर चल पड़ा। सचमुच में मैं एक आर्मेनियाई गाँव में पहुँच गया था। कुछ औरतें चटख रंगों के फटे-पुराने कपड़े पहने ज़मीन के नीचे स्थित साक्ल्या की चिकनी छत पर बैठी थीं। मैंने किसी तरह अपनी बात समझाई। उनमें से एक साक्ल्या में गयी और वहाँ से मेरे लिए पनीर और दूध लाई। कुछ मिनट आराम करने के बाद, मैं आगे बढ़ा और नदी के ऊँचेवाले किनारे पर अपने सामने गेरगेरा का क़िला देखा। ऊँचे किनारे से तीन धाराएँ शोर मचातीं, फ़ेन उड़ातीं नीचे की ओर आ रही थीं। मैंने नदी पार की। सीधे रास्ते से एक बैलगाड़ी ऊपर की ओर आ रही थी। कुछ जॉर्जियन बैलगाड़ी के साथ थे।

"कहाँ से आ रहे हैं?" मैंने उनसे पूछा।

"तेहरान से।"

"क्या ले जा रहे हैं?"

"ग्रिबोयेदोव को।" यह ग्रिबोयेदोव का मृत शरीर था, जिसे तिफ़िलिस ले जाया जा रहा था।

मैंने अपने ग्रिबोयेदोव से कभी मिलने की कल्पना भी नहीं की थी! मैं पिछले साल पीटर्सबुर्ग में उससे जुदा हुआ था, उसके पर्शिया जाने से पहले। वह बड़ा दुःखी था और उसे विचित्र पूर्वाभास हो रहा था। मैंने उसे दिलासा देना चाहा; उसने मुझसे कहा, "आप अभी इन लोगों को नहीं जानते : आप देखेंगे कि बात छुरियों तक पहुँचेगी।"

वह सोच रहा था कि ख़ून-ख़राबे की वजह होगी शाह की मौत और उसके सत्तर बेटों के बीच विवाद। परन्तु जक्खड़ बूढ़ा शाह अभी भी जीवित है, मगर ग्रिबोयेदोव के अभिशप्त शब्द सही साबित हुए। वह फ़ारसियों के खंजरों से मारा गया, अज्ञान और विश्वासघात का शिकार। उसका क्षत-विक्षत-विकृत शरीर, जो तीन दिनों तक तेहरान की भीड़ का खिलौना बना रहा, केवल उसके हाथ के कारण ही पहचाना जा सका जो कभी पिस्तौल की गोली से घायल हुआ था।

मेरा ग्रिबोयेदोव से परिचय सन् 1817 में हुआ था। उसका उदास स्वभाव,

उसका कटुतापूर्ण दिमाग़, उसकी भलमनसाहत, मानव की सर्वसाधारण कमज़ोरियाँ और विलासिता—सभी कुछ उसमें काफ़ी दिलकश था। अपनी प्रतिभा के अनुरूप स्वाभिमान के साथ पैदा हुआ वह लम्बे समय तक छोटी-छोटी ज़रूरतों और गुमनामी के जाल में फँसा रहा। सरकारी आदमी की योग्यताओं का उपयोग न हो सका; कवि की प्रतिभा को मान्यता न मिली; उसकी ठंडी और लाजवाब बहादुरी भी कुछ समय तक सन्देहों के घेरे में रही। कुछ दोस्तों को उसकी क़ाबलियत का ज्ञान था और जब कभी उन्हें उसके बारे में बातें करने का मौक़ा मिलता, जैसे वह कोई असाधारण व्यक्ति हो, तो वे उसके होठों पर अविश्वास की मुस्कुराहट देखते, बेवक़ूफ़ी भरी, बर्दाश्त न हो सकनेवाली मुस्कुराहट। लोग सिर्फ़ प्रसिद्धि पर भरोसा करते हैं और यह नहीं समझते कि उनके बीच कोई नेपोलियन हो सकता है, जिसने अभी तक किसी भी तीरन्दाज़ों की टुकड़ी का नेतृत्व नहीं किया है या कोई और देकार्त हो सकता है, जिसकी 'मॉस्को टेलीग्राफ़' में अभी तक एक भी पंक्ति न छपी हो। फिर भी, प्रसिद्धि के लिए हमारा सम्मान, शायद, हमारे अहम् से उपजता है : प्रसिद्धि की निर्मिति में हमारी भी तो आवाज़ होती है।

ग्रिबोयेदोव के जीवन को कुछ बादलों का ग्रहण लगा था : जोशीले प्रेम का परिणाम और ज़बर्दस्त परिस्थितियों का। उसने एक ही वार में अपनी जवानी का हमेशा के लिए फ़ैसला करने और जीवन को पूरी तरह बदल देने की आवश्यकता को महसूस किया। उसने पीटर्सबुर्ग और निठल्ली व्यभिचारिता से विदा ली, जॉर्जिया चला गया, जहाँ आठ साल अकेले, दिल लगाकर काम किया। सन् 1824 में मॉस्को में उसकी वापसी से उसके भाग्य में एक नया मोड़ आया और अविरल सफलताओं का सिलसिला शुरू हो गया। उसकी हस्तलिखित कॉमेडी 'ज्ञान के कारण दुःख' ने अवर्णनीय प्रभाव उत्पन्न किया और उसे फ़ौरन हमारे प्रथम श्रेणी के कवियों की पंक्ति में बिठा दिया। कुछ समय पश्चात् उस प्रान्त की सम्पूर्ण जानकारी ने, जहाँ युद्ध आरम्भ हो रहा था, उसके लिए एक नये कार्य क्षेत्र का द्वार खोल दिया; उसे राजदूत नियुक्त कर दिया गया। जॉर्जिया आकर उसने उससे विवाह कर लिया जिससे प्यार किया था...उसके तूफ़ानी जीवन के अन्तिम वर्षों से बढ़कर ईर्ष्याजनक और कोई बात मैं नहीं जानता। स्वयं मृत्यु भी, जिसने उसे साहसी, असमान युद्ध में दबोच लिया था, उसे भयानक, थका देनेवाली नहीं लगी। वह आकस्मिक एवं ख़ूबसूरत थी।

कितने अफ़सोस की बात है कि ग्रिबोयेदोव ने अपने संस्मरण नहीं छोड़े। उसकी जीवनगाथा लिखना उसके मित्रों का काम होता, मगर लाजवाब आदमी हमारे यहाँ ग़ायब हो जाते हैं; अपने पीछे बिना कोई निशान छोड़े। हम आलसी और अनुत्सुक हैं...

गेगेरा में मैं बुतुर्लीन से मिला, जो मेरी ही तरह फ़ौज में जा रहा था। बुतुर्लीन सभी सम्भव वहमों के साथ सफ़र कर रहा था। मैंने उसके साथ यूँ भोजन किया, मानो

पीटर्सबुर्ग में हूँ। हमने एक साथ सफ़र करने का इरादा किया; मगर बेचैनी का भूत फिर मुझ पर सवार हो गया। मेरे आदमी ने मुझसे आराम करने की अनुमति माँगी। मैं अकेला ही चल पड़ा, बिना पथ-प्रदर्शक के।

पहाड़ पार करके और पेड़ों से घिरी वादी में उतरने पर मैंने खनिज जल का सोता देखा, जो रास्ते के बीचोंबीच बह रहा था। यहाँ मैं आर्मेनियाई पादरी से मिला, जो ऐरेवान से अखाल्त्सिक जा रहा था।

"ऐरेवान की क्या ख़बर है?" मैंने उससे पूछा।

"ऐरेवान में हैज़ा है।" उसने जवाब दिया। "और अखाल्त्सिक के क्या हाल हैं?"

"अखाल्त्सिक में हैज़ा है।" मैंने उसे जवाब दिया।

इन शुभ समाचारों के आदान-प्रदान के बाद हम जुदा हुए।

मैं फ़सलों से लदे खेतों और फूलोंवाली वादियों से जा रहा था। पकी हुई फ़सल हसिये के इन्तज़ार में ज़मीन पर बिछी जा रही थी। मैं इस सुन्दर धरती पर मोहित हो गया, जिसकी उर्वरता पूरबी मुहावरों में समा गयी है। शाम होते-होते मैं पेर्निक पहुँच गया। यहाँ कज़ाक चौकी थी। चौकीदार ने मुझसे कहा कि तूफ़ान आनेवाला है और रात वहीं गुज़ारने की सलाह दी, मगर मैं उसी दिन, किसी भी हालत में, गुम्रोव पहुँच जाना चाहता था।

मुझे छोटे-छोटे पहाड़ पार करके जाना था, जो कार्स्क की प्राकृतिक सीमा थे। आसमान बादलों से घिरा था; मैं आशा कर रहा था कि हर घंटे तेज़ होनेवाली हवा उन्हें भगा देगी। मगर बारिश शुरू हो गयी और तेज़ होते-होते मूसलाधार हो गयी। पेर्निक से गुम्रोव की दूरी 27 मील है। मैंने अपने रोएँदार कोट के बन्द बाँधे, टोपी पर ऊनी शिरस्त्राण पहना और स्वयं को क़िस्मत के हवाले कर दिया।

दो घंटों से ऊपर बीत गये। बारिश रुकी नहीं। पानी की धाराएँ मेरे भारी हो चुके कोट और बुरी तरह पानी पी चुकी टोपी से गिर रही थीं। आख़िरकार ठंडी धारा मेरी टाई के पीछे तक पहुँचने लगी, और शीघ्र ही बारिश ने मेरा तार-तार भिगो दिया। रात अँधेरी थी; कज़ाक आगे-आगे चल रहा था, मुझे रास्ता दिखाते हुए। हम पहाड़ों पर चढ़ने लगे, इसी बीच बारिश थम गयी और बादल छँट गये। गुम्रोव तक दस मील बचे थे। आज़ादी से चल रही हवा इतनी तेज़ थी कि पन्द्रह मिनट में ही उसने मुझे पूरी तरह सुखा दिया। बुख़ार से बचने की बात मैं सोच भी नहीं रहा था। आख़िर आधी रात के क़रीब में गुम्रोव पहुँचा। कज़ाक मुझे सीधा चौकी ले गया। हम वहीं तम्बू में ठहरे, जहाँ मैं फ़ौरन घुस गया। वहाँ मुझे एक-दूसरे की बग़ल में सोये बारह कज़ाक दिखाई दिये। मुझे जगह दी गयी; मैं कोट पर लुढ़क गया, थकान के मारे बिना कुछ महसूस किये। इस दिन मैं 75 मील चला था। मैं मुर्दे की तरह सो गया।

सुबह कज़ाकों ने मुझे उठाया। पहला ही ख़याल मेरे मन में आया : कहीं मैं बुख़ार में तो नहीं पड़ा हूँ? मगर मैंने महसूस किया कि भगवान की दया से स्वस्थ और

तरोताज़ा हूँ। मैं तम्बू से बाहर सुबह की ताज़ी हवा में निकला। सूरज निकल रहा था। खुले आसमान में दो शिखरोंवाला बर्फ़ीला पहाड़ चमक रहा था।

"कौन-सा पहाड़ है?" मैंने अँगड़ाई लेते हुए पूछा, और जवाब में सुना, "यह अरारात है।"

शब्दों का प्रभाव कितना गहरा होता है! अतृप्त-सा मैं बाइबिल में वर्णित उस पर्वत को देखता रहा, उस नौका को देखा, जो उसकी चोटी की ओर जा रही थी नवनिर्माण और जीवन की आस में—और कौए और कबूतरों को जो धरती की ओर उड़ रहे थे। मृत्यु और सौहार्द के प्रतीक...

मेरा घोड़ा तैयार था। मैं मार्ग प्रदर्शक के साथ चल पड़ा। सुबह सुहानी थी। सूरज चमक रहा था। हम घास के चौड़े मैदानों से होकर जा रहे थे, घनी हरी घास पर से, जिसे ओस ने और कल की बारिश की बूँदों ने सींचा था। हमारे सामने नदी चमक रही थी, जिसे पार करके हमें जाना था।

"यह रही अर्पाचाय।" मुझसे कज़ाक ने कहा।

अर्पाचाय! हमारी सीमा! यह भी अरारात जैसी ही महत्त्वपूर्ण है। मैं एक अबूझ भावना से नदी तक घोड़े को सरपट दौड़ाते हुए आया। अभी तक मैंने कभी पराई धरती को न देखा था। सीमा मेरे लिए एक रहस्यमय चीज़ थी, बचपन से ही यात्रा करना मेरा प्रिय सपना रहा है। इसके बाद भी मैं काफ़ी समय तक घुमक्कड़ ज़िन्दगी बिताता रहा, कभी दक्षिण, तो कभी उत्तर के फेरे लगाते हुए और कभी भी रूस की असीमित सीमाओं से नहीं छिटका। मैं ख़ुशी-ख़ुशी उस पावन नदी में उतरा और मेरा भला घोड़ा मुझे तुर्की के किनारे ले गया। मगर यह किनारा तो जीता जा चुका था, मैं अभी तक रूस में ही था।

कार्स तक अभी 75 मील बाक़ी थे। मुझे शाम तक अपने कैम्प को देख पाने की उम्मीद थी। मैं कहीं भी नहीं रुका। आधे रास्ते में, आर्मेनियाई गाँव में, जो नदी किनारे के पहाड़ों पर बनाया गया है, मैंने भोजन के बदले खाई बकवास च्युरेक, राख लगी आर्मेनियाई डबल रोटी, जो चपटी आधी रोटी की शक्ल में पकाई गयी थी, जिसके लिए दारियाल दर्रे में तुर्क क़ैदी इतना रोते थे। रूसी काली डबल रोटी के एक टुकड़े के लिए मैं कोई भी क़ीमत चुकाने को तैयार था, जिससे वे एकदम नफ़रत करते थे। मुझे नौजवान तुर्क, जो बड़ा ही बातूनी था, रास्ता दिखा रहा था। वह पूरे रास्ते तुर्की में ही बड़बड़ाता रहा, यह चिन्ता किये बग़ैर कि मैं उसकी बात समझ रहा हूँ या नहीं। मैंने उसकी ओर ध्यान केन्द्रित किया और उसकी बातों का अन्दाज़ा लगाने की कोशिश करने लगा। ऐसा लग रहा था कि वह रूसियों को ग़ालियाँ दे रहा है, और हमेशा उन्हें फ़ौजी कोट में देखने का आदी होने के कारण, मुझे कोट में देखकर विदेशी समझ बैठा। रास्ते में हमें रूसी अफ़सर मिला। वह हमारे कैम्प से आ रहा था और उसने मुझसे कहा कि फ़ौज कार्स से चल चुकी है। अपनी निराशा का मैं वर्णन नहीं

कर सकता : यह ख़याल कि मुझे तिफ़्लिस वापस लौटना पड़ेगा, वीरान अर्मोनिया में बेकार ही इतनी तकलीफ़ उठाने के बाद, मुझे मार डाले जा रहा था। अफ़सर अपने रास्ते चला गया; तुर्क ने फिर अपना राग अलापना शुरू किया; मगर अब मुझे उसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी।

मैंने घोड़े को एड़ लगाई और शाम को तुर्की गाँव में पहुँचा, जो कार्स से बीस मील दूर स्थित था।

घोड़े से कूदकर मैं पहली साक्ल्या में घुसना चाहता था, मगर दरवाज़े पर मेज़बान प्रकट हुआ और उसने मुझे गालियाँ देते हुए धक्का देकर बाहर कर दिया। मैंने उसके स्वागत का जवाब कोड़े से दिया। तुर्क चीख़ने लगा; लोग जमा हो गये। मेरे वटोहिये ने शायद मेरी हिमायत की। मुझे एक कारवाँ–सराय दिखाई गयी; मैं एक बड़ी साक्ल्या में घुसा, जो अस्तबल के समान थी; कोई जगह ऐसी न थी, जहाँ मैं अपना कोट बिछा सकता। मैंने घोड़े की माँग की। मेरे पास तुर्की प्रमुख आया। उसकी सभी समझ में न आनेवाली बातों का मैंने एक ही जवाब दिया : मुझे घोड़ा दो। तुर्क राजी नहीं हुए। आख़िरकार मैंने भाँप लिया कि उन्हें पैसे दिखाने चाहिएँ (जिससे मुझे शुरुआत करनी चाहिए थी)। फ़ौरन मुझे घोड़ा दे दिया गया और मुझे पथ-प्रदर्शक भी दिया गया।

मैं चौड़ी वादी से होकर जा रहा था, जो पहाड़ों से घिरी थी। जल्दी ही मुझे कार्स दिखाई दिया, जो उनमें से एक पहाड़ पर चमक रहा था। मेरे तुर्क ने उसकी ओर इशारा करते हुए कहा, "कार्स, कार्स!" और अपना घोड़ा सरपट उस ओर दौड़ाया, मैं उसके पीछे-पीछे गया, बेचैनी से परेशान होते हुए, कार्स में मेरी क़िस्मत का फ़ैसला होनेवाला था। यहाँ मुझे पता करना था कि हमारा कैम्प कहाँ स्थित है, और क्या मेरे लिए फ़ौज तक पहुँचना सम्भव है या नहीं। इसी बीच आसमान बादलों से घिर आया और फिर से बारिश होने लगी, मगर मैं अब उसके बारे में चिन्ता नहीं कर रहा था।

हम कार्स में दाख़िल हुए। दीवार के द्वार तक जाते हुए हमने रूसी नगाड़ों की आवाज़ सुनी : शाम की धुन बजाई जा रही थी। सन्तरी ने मुझसे परिचय पत्र लिया और कमांडर के पास गया। मैं बारिश में क़रीब आधा घंटा खड़ा रहा। आख़िरकार मुझे अन्दर छोड़ा गया। मैंने मार्गदर्शक को मुझे सीधे हम्माम में ले चलने को कहा। हम टेढ़ी-मेढ़ी, ऊँची-नीची सड़कों पर चले; बकवास तुर्की पुलवाली सड़क पर घोड़े फिसल-फिसल जाते थे। हम एक घर के निकट रुके, जिसका बाहरी भाग बहुत ख़राब था। ये हम्माम थे। तुर्क घोड़े से उतरा और दरवाज़े खटखटाने लगा। किसी ने भी जवाब नहीं दिया। बारिश मुझ पर बुरी तरह बरस रही थी। आख़िर निकट के घर से एक नौजवान आर्मेनियाई बाहर आया और मेरे तुर्क से बातें करने के बाद मुझे उसने अपने पास बुलाया, स्पष्ट रूसी भाषा में बोलते हुए। वह मुझे तंग सीढ़ियों से अपने घर के दूसरे आवास खंड में ले गया। छोटे क़द के दीवानों और फटे पुराने गलीचोंवाले कमरे में एक वृद्धा, उसकी माँ, बैठी थी। वह मेरे क़रीब आयी और मेरा हाथ चूम

लिया। बेटे ने उसे अँगीठी जलाने और मेरे लिए खाना बनाने को कहा। मैंने कपड़े उतारे और अँगीठी के सामने बैठ गया। मेज़बान का छोटा भाई, सत्रह बरस का लड़का, अन्दर आया। दोनों भाई तिफ़्लिस में कई महीने रह चुके थे। उन्होंने मुझे बताया कि हमारी फ़ौजें कल ही यहाँ से कूच कर चुकी हैं, और हमारा कैम्प कार्स से 25 मील की दूरी पर है। मुझे पूरा इत्मीनान हो गया। जल्दी ही बुढ़िया ने मेरे लिए प्याज़ डालकर भेड़ का मांस बना दिया, जो मुझे पाक कला का बेहतरीन नमूना प्रतीत हुआ। हम सब एक ही कमरे में लेट गये: मैं बुझती हुई अँगीठी के सामने काउंट पास्केविच से दूसरे दिन मिलने की आशा लिए लेट गया।

सुबह मैं शहर देखने निकला। छोटा भाई मेरा पथ-प्रदर्शक बन गया। सुरक्षा व्यवस्था और भीतरी दुर्ग को, जो दुर्गम चट्टान पर बने थे, देखते हुए मैं समझने में असमर्थ था कि हमने कार्स पर अधिकार कैसे किया। मेरे आर्मेनियाई ने अपनी योग्यतानुसार फ़ौजी गतिविधियों को समझाया, जिनका वह स्वयं गवाह था। उसमें युद्ध करने का शौक़ देखकर मैंने उसे मेरे साथ फ़ौज में चलने के लिए कहा। वह फ़ौरन तैयार हो गया। मैंने उसे घोड़ों के लिए भेजा। वह एक अफ़सर के साथ लौटा, जिसने मुझसे लिखित में अनुमति पत्र माँगा। उसके एशियाई नाक-नक़्श को देखते हुए मैंने अपने काग़ज़ात को ढूँढ़ना ज़रूरी नहीं समझा और जेब में हाथ डालकर जो भी काग़ज़ हाथ में आया, उसे थमा दिया। अफ़सर ने बड़ी गम्भीरता से उसे देखकर, फ़ौरन महानुभाव के लिए, लिखित अनुमति के अनुसार, घोड़े लाने की आज्ञा दी और मेरा काग़ज़ मुझे लौटा दिया, यह काल्मीच्का के लिए पत्र था, जो कॉकेशस की किसी चौकी पर मैंने घसीट दिया था। आधे घंटे बाद मैं कार्स से निकला। आर्तेमी (मेरे अर्मेनियाई का यही नाम था) तुर्की घोड़े पर मेरे साथ-साथ चल रहा था, हाथ में पतली लचीली बर्छी लिए, कमरबन्द में खंजर खोंसे, तुर्कों और युद्धों के बारे में बड़बड़ाते हुए।

मैं चारों ओर गेहूँ बोयी गयी धरती पर चल रहा था, चारों ओर गाँव दिखाई दे रहे थे, मगर वे ख़ाली थे : निवासी भाग गये थे। रास्ता ख़ूबसूरत था और दलदली जगह पर पुलोंवाला—नालों के ऊपर पथरीले पुल बने थे। ज़मीन कुछ ऊँची हो चली थी—सगान-लू पर्वत शृंखला, प्राचीन ताम्र, के सामनेवाले टीले, दिखाई देने लगे थे। दो घंटे बीते; मैं ऊँची चढ़ाई पर पहुँचा और अचानक अपने कैम्प को देखा, जो कार्स-चाय के किनारे पर डेरा डाले था, कुछ ही मिनटों बाद मैं रायेव्स्की के तम्बू में था।

3

मैं समय पर पहुँच गया। उसी दिन (13 जून को) फ़ौजों को आगे चलने का हुक्म मिला। रायेव्स्की के यहाँ खाना खाते समय मैं युवा जनरलों की बातें सुन रहा था, जो

कूच करने की पूर्व निर्धारित योजना पर विचार कर रहे थे। जनरल वुर्त्सोव बाईं ओर से, अर्ज़रूमवाले राजमार्ग से, सीधे तुर्की कैम्प के एकदम सामने जानेवाला था, जबकि अन्य फ़ौजें दाहिनी ओर से दुश्मन को घेरती हुई आगे बढ़नेवाली थीं।

चार बजे के बाद फ़ौजों ने प्रस्थान किया। मैं नीझगोरद के घुड़सवार दस्ते के साथ रायेव्स्की से बातें करता हुआ जा रहा था, जिससे मैं पिछले कई सालों से मिला नहीं था। रात हो गयी, हम वादी में रुके, जहाँ पूरी फ़ौजों का पड़ाव था। यहाँ मुझे काउंट पास्केविच से परिचित करवाये जाने का सम्मान प्राप्त हुआ।

मुझे काउंट कैम्प फ़ायर के सामने घर में ही अपने अधिकारियों से घिरे हुए मिल गये, वे बड़े हँसमुख थे और उन्होंने बड़े प्यार से मेरा स्वागत किया। रणनीति से नावाक़िफ़, मुझको यह सन्देह भी नहीं हुआ कि इस क्षण लड़ाई के अंजाम के बारे में फ़ैसला हो रहा था। यहाँ मुझे हमारा वोलखोव्स्की दिखाई दिया, धूल-धूसरित, बढ़ी हुई दाढ़ी, हैरान परेशान! फिर भी एक पुराने दोस्त की तरह उसने मुझसे बतियाने का समय निकाल ही लिया। यहाँ मुझे मिखाईल पुश्शिन[1] भी दिखाई दिया, जो पिछले वर्ष घायल हो गया था। उसकी एक प्यारे साथी और बहादुर सैनिक के रूप में सभी इज़्ज़त करते हैं, उससे प्यार करते हैं। मेरे पुराने साथियों में से कइयों ने मुझे घेर लिया। कितने बदल गये थे वे! वक़्त कितनी जल्दी बीत जाता है!

है ऽ ऽ ऽ! ओ, पोस्तूम पोस्तूम
तेज़ी से उड़ते, जाते हैं, द्रुतगामी साल...[2]

मैं रायेव्स्की के पास वापस आया ओर उसके तम्बू में सो गया। आधी रात को भयानक चीख़ों ने मुझे जगा दिया : कोई भी यह सोच सकता था कि दुश्मन ने आकस्मिक हमला बोल दिया है। रायेव्स्की ने इस उत्तेजना का कारण जानने के लिए आदमी भेजा : कुछ तातारी घोड़े, रस्सी तुड़ाकर कैम्प में इधर-उधर भाग रहे थे, और मुसलमान (हमारी फ़ौज में काम करनेवाले तातारों को इसी नाम से पुकारते हैं) उन्हें पकड़ रहे थे।

सुबह फ़ौज आगे बढ़ी। हम जंगलों से ढँके पहाड़ों की ओर बढ़े। हम दर्रे में दाख़िल हुए। घुड़सवार सैनिक आपस में बातें कर रहे थे, "देखो भाई, सँभल के; कहीं तोप के गोलों न दबोच लें।" सचमुच वह जगह छुपकर हमला करने के लिए बड़ी अच्छी थी; मगर दूसरी ओर से बढ़े आ रहे जनरल वुर्त्सोव द्वारा ध्यान खींच लेने के कारण तुर्कों ने मौक़े का फ़ायदा नहीं उठाया। हम सही-सलामत ख़तरनाक दर्रे को पार

---

1. मिखाईल पुश्शिन—पूश्किन के सहपाठी का भाई, जिसे डिसेम्बर क्रान्ति में भाग लेने के फलस्वरूप सिपाही बनाकर कफ़कोज़ भेज दिया गया था। जब पूश्किन वहाँ पहुँचा, तब तक वह अफ़सर बन चुका था।
2. होरोशेयो के वीर काव्य से ली गई पंक्ति।

करके सगान-लू की चोटियों पर पहुँच गये—दुश्मन के कैम्प से दस मील दूर।

मौसम बड़ा उदास था। हवा ठंडी थी, पहाड़ चीड़ के दयनीय वृक्षों से ढँका था। खाइयों में बर्फ़ पड़ी थी।

हम कुछ सुस्ताकर थोड़ी देर आराम कर ही चुके थे कि गोलियों की आवाज़ सुनाई दी। रायेव्स्की ने पता लगाने के लिए भेजा। उसे बताया गया कि तुर्कों ने हमारी सामने वाली चौकियों पर गोलीबारी की है। मैं सेमिचेव[1] के साथ इस नये दृश्य को देखने चल पड़ा। हमें ज़ख़्मी कज़ाक मिला, जो ख़ून से लथपथ, विवर्ण, थरथराते हुए, घोड़े की जीन पर बैठा था। दो कज़ाकों ने उसे सहारा दिया।

"क्या तुर्क बहुत सारे हैं?" सेमिचेव ने पूछा।

"सुअरों की तरह बढ़े आ रहे हैं, जनाब।" उनमें से एक ने जवाब दिया।

दर्रा पार करने के बाद अचानक सामनेवाले पहाड़ की ढलान पर हमने क़रीब दो सौ कज़ाकों को देखा, जो घोड़ों पर बिखरे हुए थे और उनके ऊपर थे क़रीब पाँच सौ तुर्क। कज़ाक धीरे-धीरे पीछे हट रहे थे; तुर्क बड़ी ढिठाई से बढ़े आ रहे थे, बीस क़दम की दूरी तक आते और गोलियाँ चलाकर एकदम पीछे भाग जाते। उनके ऊँचे शिरस्त्राण, ख़ूबसूरत कोट और घोड़ों की चमकीली ज़ीनें हमारे कज़ाकों के नीले कोटों और सीधी-साधी काठियों के बिलकुल विपरीत प्रतीत हो रहे थे। हमारे क़रीब पन्द्रह आदमी ज़ख़्मी हो चुके थे। सहायक जनरल बासोव ने सहायता मँगवाई। इस वक़्त उसका भी पैर ज़ख़्मी हो चुका था। कज़ाक अपनी जगह से भागने की तैयारी में थे। मगर बासोव फिर से घोड़े पर सवार हो गया और अपनी टुकड़ी का नेतृत्व करता रहा। सहायता वक़्त पर आ गयी। यह देखकर तुर्क फ़ौरन ग़ायब हो गये, पहाड़ पर एक कज़ाक की क्षतविक्षत निर्वस्त्र मृत देह छोड़कर, जिसका सिर ग़ायब था। काटे हुए सिर तुर्क कन्स्तान्तिनोपोल भेज देते हैं, और हाथों की हड्डियाँ, ख़ून में डुबोकर अपने झंडों पर उनसे निशान बनाते हैं। गोलियाँ थम गयीं। फ़ौजों के हमसफ़र, उक़ाब, पहाड़ों के ऊपर मँडरा रहे थे, अपने लक्ष्य को ऊँचाई से देखते हुए। इसी समय जनरलों और अफ़सरों की भीड़ दिखाई दी : काउंट पास्केविच आ पहुँचा था और उस पहाड़ की ओर बढ़ रहा था, जिसके पीछे तुर्क छिपे हुए थे। वे खाइयों और गहरी घाटी

---

1. सेमिचेव—डिसेम्बर क्रान्तिकारी; छह महीने की जेल के बाद उसे कफ़काज़ भेज दिया गया। नीचे वर्णित हमले में (14 जून, 1829) को स्वयं पूश्किन ने भी भाग लिया था :

"एक काव्यात्मक जोश में वह (पूश्किन) फ़ौरन उछलकर घोड़े पर बैठ गया और पलभर में चौकी पर पहुँच गया। अनुभवी मेजर सेमिचेव ने, जिसे रायेव्स्की ने कवि के पीछे भेजा था, बड़ी मुश्किल से उसे पकड़कर ज़बर्दस्ती कज़ाकों की अग्रिम पंक्ति से पीछे खींचा, उस क्षण, जब पूश्किन ने नये-नये फ़ौजी की ज़बर्दस्त बहादुरी से उत्साहित एक मृत कज़ाक की बर्छी खींचकर दुश्मन पर निशाना साधा था।"

(एन.ई. उशाकोव, एशियाई तुर्की में 1828-29 में हुई फ़ौजी कार्रवाइयों का इतिहास)

में छिपाये गये 4000 घुड़सवारों से लैस थे। पहाड़ की चोटी से हमें तुर्क छावनी दिखाई दी, जिसे पहाड़ियाँ और खाइयाँ हमसे जुदा कर रही थीं। हम काफ़ी देर से लौटे। हमारे कैम्प से आते समय मैंने अपने ज़ख़्मियों को देखा, जिनमें से पाँच आदमी उसी रात और दूसरे दिन मर गये थे। शाम को मैं नौजवान ओस्तेन-साकेन से मिलने गया जो उसी दिन एक दूसरी कार्रवाई में घायल हुआ था।

कैम्प की ज़िन्दगी मुझे बहुत पसन्द आ गयी। सुबह-सुबह तोप का गोला हमें जगाता। तम्बू में नींद बड़ी गहरी आती है। भोजन के समय हम एशियाई कबाब खाते ताम्र की बर्फ़ में जम चुकी अंग्रेज़ी बियर और शैम्पेन के साथ। हमारा समाज मिले-जुले लोगों का था। जनरल रायेव्स्की के तम्बू में मुसलमानी फ़ौजी दस्तों के 'बेग' जमा होते; और बातचीत होती दुभाषिये के ज़रिये। हमारी फ़ौज में हमारे कॉकेशस पार के प्रान्तों के लोग थे, और हाल ही में जीते गये प्रान्तों के निवासी भी थे। इनके बीच मैं बड़ी उत्सुकता से 'याज़िदों' को देखा करता, जिन्हें पूरबी मुल्कों में शैतान की इबादत करनेवाली क़ौम समझा जाता है। अरारात की तलहटी में क़रीब तीन सौ परिवार रहते हैं। उन्होंने रूसी सम्राट का आधिपत्य स्वीकार कर लिया है। उनका कमांडर, लम्बा, बदसूरत आदमी, लाल कोट और काली टोपी पहने कभी-कभी सलाम करने जनरल रायेव्स्की के पास आया करता, जो पूरे घुड़सवार दस्ते का कमांडर था। मैंने 'याज़िद' से उनके मज़हब के बारे में जानने की कोशिश की। मेरे सवालों के जवाब में उसने कहा कि यह अफ़वाह कि याज़िद शैतान की इबादत करते हैं, कोरी गप्प है; वे ख़ुदा में यक़ीन करते हैं; उनके क़ायदे के मुताबिक़ शैतान को ग़ालियाँ देना, सचमुच बुरा और बदसलीके वाला काम समझा जाता है, क्योंकि अब वह दुःखी है, मगर वक़्त के साथ-साथ शायद उसे माफ़ कर दिया गया है, क्योंकि अल्लाह की रहम की कोई इन्तेहा नहीं होती। इस स्पष्टीकरण से मुझे तसल्ली हो गयी। मुझे बड़ी ख़ुशी हुई कि याज़िद शैतान के सामने सिर नहीं झुकाते हैं, और उनकी भ्रान्तियाँ काफ़ी हद तक माफ़ करने लायक़ हैं।

मेरा आदमी कैम्प पहुँचा, मेरे आने के तीन दिन बाद। वह काफ़िले के साथ आया, जो दुश्मन की कार्रवाई को देखते हुए फ़ौज के साथ सही सलामत जुड़ गया था। (नोट : पूरे अभियान के दौरान हमारे लम्बे कारवाँ की एक भी गाड़ी को दुश्मन ने नहीं पकड़ा था। जिस तरह से कारवाँ फ़ौज के पीछे-पीछे चलता था, वह सचमुच आश्चर्यजनक है।)

17 जून को सुबह हमने फिर से गोलीबारी की आवाज़ सुनी और दो घण्टे बाद कराबाख दस्ते को आठ तुर्की झंडों के साथ लौटते हुए देखा : जनरल फ्रेडरिक्स दुश्मन से जूझ गया था, उसने उसे पथरीले टीलों के पास दबोच कर भगा दिया; उस्मान पाशा, घुड़सवार दस्ते का नायक, बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचा पाया।

18 जून को कैम्प दूसरी जगह रुका। 19 को तोप के गोले ने हमें जगाया ही

था कि चारों ओर हलचल होने लगी। जनरल अपनी-अपनी चौकियों की ओर चले, फ़ौजी दस्तों की क़तारें बन गयीं; अफ़सर अपनी-अपनी टुकड़ियों के पास खड़े हो गये। मैं अकेला ही बच रहा, यह न जानते हुए कि किस ओर जाऊँ, और मैंने घोड़े को ख़ुदा के रहमोकरम पर छोड़ दिया।

मैं जनरल बुर्त्सोव से मिला जिसने मुझे बायें पार्श्व की ओर बुलाया। 'यह बायाँ पार्श्व क्या है?' मैंने सोचा और आगे चल पड़ा। मैंने जनरल मुराव्योव को देखा, जो तोपों को विभिन्न ठिकानों पर रखवा रहा था। जल्दी ही देलिबाश[1] नज़र आये, जो हमारे कज़ाकों पर गोलियाँ बरसाते हुए घाटी में घूम रहे थे। इस बीच उनकी पैदल सेना का एक बड़ा हिस्सा ढलान पर जा रहा था। जनरल मुराव्योव ने गोलीबारी करने का हुक्म दिया। गोला भीड़ के बीचोंबीच जाकर गिरा। तुर्की एक ओर को गिरकर ऊँचाई के पीछे छिप गये। मैंने काउंट पास्केविच को अपने सैनिक अधिकारियों से घिरे हुए देखा। तुर्क गहरी खाई के दूसरी ओर खड़ी हमारी फ़ौज के पीछे से घूम गये। काउंट ने पुश्शिन को खाई का निरीक्षण करने के लिए भेजा। पुश्शिन ने घोड़े को ऐड़ लगाई। तुर्कों ने उसे एक घुड़सवार समझकर उस पर गोलियों की बौछार कर दी। सभी हँस पड़े। काउंट ने तोपें दाग़ने का हुक्म दिया। दुश्मन घाटी में और ढलान पर बिखर गया। बायें पार्श्व में, जहाँ मुझे बुर्त्सोव ने बुलाया था, ज़ोरदार लड़ाई चल रही थी। हमारे सामने बीचोंबीच एकदम सामने तुर्क घोड़े दौड़ रहे थे। काउंट ने उसका मुक़ाबला करने के लिए जनरल रायेव्स्की को भेजा, जिसने अपने नीझेगोरोद्स्की दस्ते को आक्रमण करने के लिए उतारा। तुर्क ग़ायब हो गये। हमारे तातारों ने उनके ज़ख़्मियों को घेर लिया और फ़ौरन उनके कपड़े उतार लिए, वस्त्रहीन दशा में उन्हें खेत के बीच छोड़ दिया। जनरल रायेव्स्की खाई के किनारे पर रुक गया। दो स्क्वाड्रन, फ़ौज से अलग होकर उन्हें खदेड़ने निकल पड़े, उनका नेतृत्व जनरल सिमोनिच कर रहा था।

लड़ाई धीमी पड़ गयी; तुर्क हमारी नज़रों के सामने ही धरती खोदने लगे, पत्थरों को खींच-खींचकर लाने लगे और अपनी आदत के मुताबिक़ मोर्चे सँभालने लगे।

हमने उन्हें तंग नहीं किया। हम घोड़ों से उतर पड़े और भोजन करने लगे : जो भी ख़ुदा की मेहरबानी से मिल गया वही खा लिया। इसी समय काउंट के पास कुछ क़ैदियों को लाया गया। उनमें से एक गम्भीर रूप से घायल था। उनसे पूछताछ की गयी। लगभग छह बजे फिर फ़ौजों को दुश्मन पर हमला करने का आदेश प्राप्त हुआ। तुर्क अपनी खाइयों के पीछे रेंग रहे थे, उन्होंने गोलियों की बौछार से हमारा स्वागत किया और जल्द ही पीछे हटने लगे। हमारा घुड़सवार दस्ता सामने था; हम खाई में उतरने लगे; घोड़ों की टापों के नीचे धरती कट-कटकर बिखरती जाती। किसी भी पल

---

1. देलिबाश—तुर्क घुड़सवार।

मेरा घोड़ा गिर सकता था, और तब यह मिश्रित घुड़सवार दस्ता मुझे रौंदता हुआ गुज़र जाता। मगर ख़ुदा ने बचा लिया। जैसे ही हम पहाड़ों से गुज़रनेवाले चौड़े रास्ते पर पहुँचे, हमारे घुड़सवार सरपट भागने लगे। तुर्क भाग रहे थे; कज़ाक रास्ते में फेंक दी गयी तोपों पर चाबुक बरसाते हुए गुज़र रहे थे। तुर्क रास्ते के दोनों ओर स्थित खाइयों में बिखर गये; वे अब गोलियाँ नहीं चला रहे थे, कम-से-कम मेरे कानों के निकट से तो एक भी गोली नहीं गुज़री। उनका पीछा करनेवालों में सबसे आगे थे हमारे तातारी दस्ते जिनके घोड़े ताक़त और रफ़्तार में सबसे आगे रहते हैं। मेरा घोड़ा, लगाम मुँह में भींचे, उनसे पिछड़ नहीं रहा था; मैं बड़ी मुश्किल से उसे थाम रहा था। वह एक युवा तुर्क के मृत शरीर के सामने रुक गया जो रास्ते के बीचोंबीच पड़ा था। उसकी उम्र, शायद 18 साल की थी, विवर्ण कमसिन चेहरा, बिगाड़ा नहीं गया था। उसका टोप धूल में लुढ़क गया था; घुटे हुए सिर पर गोली लगी थी। मैं क़दम-क़दम बढ़ता गया; जल्दी ही रायेव्स्की ने मुझे पकड़ लिया। उसने काग़ज़ के टुकड़े पर काउंट पास्केविच के लिए दुश्मन की पूरी तरह हार के बारे में सन्देश लिखा और आगे चल पड़ा। मैं दूर से उसके पीछे-पीछे चल रहा था। रात हो गयी। मेरा थका हुआ घोड़ा पिछड़ रहा था और हर क़दम पर लड़खड़ा रहा था। काउंट पास्केविच ने कार्रवाई न रोकने का आदेश दिया और स्वयं निर्देशन करने लगा। हमारी घुड़सवार टुकड़ियाँ मुझ तक पहुँच गयीं; मैंने कज़ाक तोपख़ाने के नायक कमांडर पोल्याकोव को देखा जिसने उस दिन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, और उसके साथ एक निर्जन गाँव में पहुँचा जहाँ रात हो जाने के कारण काउंट पास्केविच फ़ौजी कार्रवाई रोक कर विश्राम कर रहा था।

हमने काउंट को भूमिगत साक्ल्या की छत पर, अलाव के सामने बैठे देखा। उसके पास क़ैदियों को लाया गया। वह उनसे पूछताछ कर रहा था। वहीं लगभग सभी कमांडर मौजूद थे। कज़ाक उनके घोड़ों की लगामें थामे थे। अलाव साल्वातोर-रोज़ा[1] की क़ाबिले तारीफ़ तस्वीर, 'अँधेरे में नदी का शोर', को आलोकित कर रहा था। इसी समय काउंट को सूचना दी गयी कि गाँव में बारूद का बड़ा ज़खीरा छोड़ दिया गया है और विस्फोट होने का ख़तरा है। काउंट अपने पूरे तामझाम के साथ साक्ल्या छोड़कर चल पड़ा। हम अपने पड़ाव की ओर चल पड़े जो यहाँ से तीस मील दूर था, यहाँ हमने रात बिताई। रास्ता घुड़सवार दस्तों से भरा था। हम इस जगह पहुँचे ही थे कि अचानक आसमान चमक उठा, जैसे कोई उल्का चमकी हो, और हमने कानों को बहरा कर देनेवाला विस्फोट सुना। साक्ल्या, जिसे हम क़रीब पन्द्रह मिनट पहले छोड़ आये थे, चिथड़े-चिथड़े होकर हवा में उड़ गयी : उसी में बारूद का ज़खीरा था। लुढ़कते हुए पत्थरों ने कई कज़ाकों को दबा दिया।

---

1. साल्वातोर रोज़ा (1615-1673) इतालवी चित्रकार। 17-18 सदी की यूरोपियन फ़ौजी दृश्यों के चित्रण पर उसने गहरा प्रभाव डाला था।

बस यही कुछ मैं उस समय देख पाया। शाम को मुझे पता चला कि इस हमले में अर्ज़रूम का सेराक्सीर[1] जो तीस हज़ार सैनिकों को लेकर गाकी पाशा की फ़ौज से मिलने जा रहा था, हार गया। सेराक्सिर अर्ज़रूम की ओर भाग गया; उसकी सेना जिसे सगान-लू के पीछे धकेल दिया गया था, बिखर गयी, तोपख़ाना पकड़ लिया गया और हमारे हाथों अकेला गाकी पाशा पड़ गया। काउंट पास्केविच ने उसे सँभलने का समय ही नहीं दिया।

4

दूसरे दिन चार बजते ही छावनी जाग गयी और उसे आगे वढ़ने का हुक्म मिला। तम्बू से निकलते ही मेरी मुलाक़ात काउंट पास्केविच से हो गयी, जो सवसे पहले उठ गया था। उसने मुझे देखा।

"आप कल के वाक़ये के वाद थक तो नहीं गये?"

"थोड़ा-सा।"

"काउंट महाशय, मुझे आपके लिए थोड़ा-सा अफ़सोस है, क्योंकि हमें एक और रास्ता पार करना है, जिससे कि पाशा को पकड़ सकें, और उसके वाद दुश्मन को और तीस मील पीछे धकेलना है।"

हम आगे चले और क़रीब आठ बजे एक ऊँची जगह पर पहुँचे, जहाँ से गाकी पाशा की छावनी यूँ दिखाई दे रही थी, मानों हथेली पर रखी हो। तुर्की ने अपने सभी तोपख़ानों से गोले वरसाना शुरू किया जिनसे कोई नुक़सान नहीं हो सकता था। इसी वीच उनकी छावनी में काफ़ी गहमा-गहमी चल रही थी। थकान और सुवह की गर्मी ने हममें से कइयों को घोड़ों से उतरकर हरी घास में लेटने को मजवूर कर दिया। मैंने लगाम अपने हाथ पर अटका ली और आगे जाने के आदेश की प्रतीक्षा में मीठी नींद सो गया। पन्द्रह मिनट बाद मुझे जगाया गया। चारों ओर हलचल थी। एक ओर से क़तारें तुर्की छावनी की ओर वढ़ रही थीं; दूसरी ओर से—घुड़सवार दस्ता दुश्मन को खदेड़ने की तैयारी कर रहा था। मुझे नीझेगोरोद्स्की दस्ते के पीछे जाना था, मगर मेरा घोड़ा लड़खड़ा रहा था। मैं पिछड़ गया। मेरे सामने से उलान्स्की दस्ता गुज़र गया। उसके बाद तीन तोपों के साथ वोल्ख़ोव्स्की दस्ता उछलता हुआ जाने लगा। जंगल लगे पहाड़ों पर मैं अकेला रह गया। संयोग से एक घुड़सवार मिल गया, जिसने वताया कि जंगल दुश्मनों से भरा है। मैं मुड़ा। मुझे पैदल सेना के साथ जनरल मुराव्योव मिल गया। उसने एक टुकड़ी को जंगल साफ़ करने के लिए भेज दिया। ढलवाँ घाटी की ओर आते समय मैंने एक अजीव तस्वीर देखी। पेड़ के नीचे हमारा एक तातार-वेग

---

1. सेराक्सीर—तुर्की फ़ौजों का मुख्य कमांडर।

गम्भीर रूप से घायल हुआ पड़ा था। उसके पास उसका मेहबूब ज़ार-ज़ार रो रहा था। मुल्ला, घुटने टेके नमाज़ पढ़ रहा था। आख़िरी साँसें गिनता हुआ बेग ग़ज़ब के सुकून के साथ टकटकी बाँधे अपने नौजवान दोस्त को देखे जा रहा था। घाटी में क़रीब पाँच सौ क़ैदी जमा किये गये। कुछ ज़ख़्मी तुर्कों ने मुझे इशारों से बुलाया, शायद वे मुझे डॉक्टर समझकर मदद माँग रहे थे, जो मैं उन्हें नहीं दे सकता था। जंगल में से अपने ज़ख़्म को ख़ून से लथपथ चीथड़े से दबाये एक तुर्क बाहर आया। सिपाही उसे, शायद इन्सानियत के नाते, घोंपने के लिए आगे बढ़े। मगर इससे मैं बहुत हैरान हो गया; मैं उसकी हिमायत करके ज़बर्दस्ती ख़ून से लथपथ पस्त ग़रीब तुर्क को उसके साथियों के पास ले गया। उनके साथ जनरल अन्रेप था। वह दोस्ताना अन्दाज़ में उनके पाइपों से हुक़्क़ा पी रहा था, तुर्की छावनी में हैज़ा फैलने की अफ़वाहों के बावजूद। क़ैदी आपस में शान्तिपूर्वक बातें करते हुए बैठे थे। क़रीब-क़रीब सभी नौजवान थे। थोड़ी देर आराम करके हम आगे बढ़े। पूरे रास्ते में मुर्दे बिखरे पड़े थे। पन्द्रह मील के बाद मुझे नीझेगोरोद्स्की दस्ता मिला, जो चट्टानों के बीच से बहती नदी के किनारे पर रुका था। दुश्मन का पीछा कुछ और घंटों तक चलता रहा। शाम होते-होते हम घने जंगल से घिरी एक वादी में पहुँचे और आख़िरकार पिछले दो दिनों में अस्सी मील से ऊपर का सफ़र करने के बाद मैं आराम से सोया।

दूसरे दिन दुश्मन का पीछा कर रही फ़ौजों को छावनी में वापस लौटने का हुक्म मिला। यहाँ हमें पता चला कि क़ैदियों के बीच एक अर्धनारी पुरुष है। मेरे अनुरोध पर रायेव्स्की ने उसे लाने का हुक्म दिया। मैंने एक ऊँचे, काफ़ी मोटे, मुड़ी हुई नाकवाले व्यक्ति को देखा। हमने डॉक्टर की मौजूदगी में उसका निरीक्षण किया। इस आदमी का औरतों जैसा सीना था, अविकसित पुरुष जननांग था। हमने उससे पूछा कि कहीं उसे बधिया तो नहीं किया गया।

उसने जवाब दिया, "ख़ुदा ने मुझे बधिया किया है।"

यह बीमारी, जिसके बारे में हिप्पोक्रेट को मालूम था, मुसाफ़िरों के अनुसार ख़ानाबदोश तातारों और तुर्कों में पाई जाती है। इस अर्धनारी मूर्ति को तुर्की में 'होस्स' कहते हैं।

हमारी फ़ौजें कल ही जीती हुई तुर्की छावनी में खड़ी थीं। काउंट पास्केविच का तम्बू क़ैद किये गये गाकी पाशा के हरे तम्बू के निकट ही था। मैं उसके पास गया और उसे अपने अफ़सरों से घिरा पाया। वह पैरों को अपने नीचे मोड़े बैठा हुआ हुक़्क़ा पी रहा था। वह चालीस साल का दिखाई देता था। उसके ख़ूबसूरत चेहरे पर गरिमा और गहरी शान्ति थी। आत्मसमर्पण करने के बाद उसने अनुरोध किया कि उसे एक प्याला कॉफ़ी दी जाए और उससे सवाल न पूछे जाएँ।

हम घाटी में खड़े थे। सगान-लू के बर्फ़ीले और जंगलों से लदे पहाड़ पीछे छूट गये थे। हम आगे चले, दुश्मन कहीं नज़र नहीं आ रहा था। गाँव सुनसान थे।

आसपास का नज़ारा भी बड़ा दयनीय था। हमने पथरीले किनारों के बीच तेज़ी से बहते अराक्स को देखा। हस्सन-काले से पन्द्रह मील दूर सात असमान मेहराबों के ऊपर ख़ूबसूरती से बनाया गया लाजवाब पुल है। कहते हैं कि यह पुल एक दौलतमन्द चरवाहे ने बनवाया था, जो टीले की ऊँचाई पर फ़कीरों की हालत में मर गया, जहाँ दो अकेले चीड़ के पेड़ों से घिरी अभी भी उसकी क़ब्र है। आसपास के गाँवों से लोग यहाँ दुआ माँगने आते हैं। पुल को 'चबान केप्री' (चरवाहे का पुल) कहते हैं। तेब्रीज जाने के लिए रास्ता यहीं से गुज़रता है।

पुल से कुछ क़दम चलने पर कारवाँ सराय के अँधेरे भग्नावशेषों में गया। मुझे एक बीमार गधे को छोड़कर और कोई नहीं नज़र आया, जिसे भागते हुए गाँववाले छोड़ गये थे।

24 जून को सुबह हम प्राचीन क़िले हस्सन-काले पहुँचे, जिसमें कल ही राजकुमार बेकोविच रुका था। वह हमारे रात के ठिकाने से पन्द्रह मील दूर था। दूर-दूर के पड़ावों ने मुझे थका दिया। मुझे उम्मीद थी कि आराम कर सकूँगा; मगर हुआ उल्टा ही।

घुड़सवार दस्ते के प्रस्थान करने से पहले हमारे कैम्प में आर्मेनियाई आये, जो पहाड़ों में रहते थे, और माँग करने लगे कि तुर्कों से उनकी रक्षा की जाए जिन्होंने तीन दिन पहले उनके मवेशियों को भगा दिया था। जनरल अन्रेप ठीक से समझ न पाया कि वे क्या चाहते हैं, उसने सोचा कि पहाड़ों में तुर्क दस्ता है, और वह उलान्स्की दस्ते की एक स्क्वार्डन को लेकर चल पड़ा, रायेव्स्की को यह सन्देश भेजकर कि पहाड़ों में तीन हज़ार तुर्क मौजूद हैं। रायेव्स्की उसके पीछे चल पड़ा जिससे मुसीबत के समय उसकी मदद कर सके। मैंने स्वयं को नीझेगोरोद्स्की दस्ते से जुड़ा समझकर बड़े उद्विग्न मन से घोड़े को एड़ लगाई और आर्मेनियाइयों की आज़ादी के लिए निकल पड़ा। क़रीब बीस मील जाने पर हम एक गाँव में गये और कुछ पिछड़ गये घुड़सवारों को देखा, जो हाथों में नंगी तलवारें लिए तेज़ी से कुछ मुर्ग़ियों का पीछा कर रहे थे। यहाँ एक गाँववाले ने रायेव्स्की को समझाया कि बात तीन हज़ार साँड़ों की हो रही थी, जिन्हें तीन दिन पहले तुर्कों ने भगा दिया था और जिन्हें दो दिनों बाद पकड़ना काफ़ी आसान होगा। रायेव्स्की ने घुड़सवारों को मुर्ग़ियों का पीछा करने से रोका और जनरल अन्रेप को वापस लौटने का आदेश दिया। हम वापस आये और पहाड़ों से उतरकर हस्सन-काले के नज़दीक पहुँच गये। मगर इस तरह कुछ अर्मेनियाई मुर्ग़ियों की जान बचाने के चक्कर में चालीस मील का फ़ासला तय करना पड़ा, जो मुझे ज़रा भी दिलचस्प नहीं लगा।

हस्सन-काले को अर्ज़रूम का प्रवेश-द्वार समझा जाता है। शहर एक चट्टान की तलहटी में है, जिसका सिरमौर एक क़िला है। उसमें क़रीब सौ आर्मेनियाई परिवार हैं। हमारी छावनी क़िले के सामने फैले-चौड़े समतल मैदान में थी। यहाँ मैं एक गोल

पथरीली इमारत में गया, जिसमें गन्धक-लौह का गर्म पानी झरता है। गोलाकार हम्माम का व्यास तीन साझेन[1] है। मैंने दो बार तैरकर उसे पार किया और अचानक मेरा सिर घूमने लगा और जी मिचलाने लगा, बड़ी मुश्किल से मैं सोते के पथरीले किनारे पर आया। इन झरनों का पानी पूरब में काफ़ी मशहूर है, मगर अच्छे डॉक्टर न होने की वजह से, यहाँ के निवासी उनका बग़ैर सोचे-समझे, वग़ैर कोई फ़ायदा उठाये उपयोग करते हैं।

हस्सन-काले की दीवारों के नीचे मूर्त्स नदी बहती है, उसके किनारे लौह के झरनों से ढँके हैं, जो पत्थरों के नीचे से फूटकर नदी में जा मिलते हैं। उनके पानी का स्वाद उतना अच्छा नहीं है, जितना कफ़काज़ की नार्ज़ान[2] का है, और वह ताँबे जैसा प्रतीत होता है।

25 जून को सम्राट के जन्मदिन पर क़िले की दीवारों के नीचे हमारी छावनी में फ़ौजें सामूहिक प्रार्थनाएँ सुन रही थीं। काउंट पास्केविच के यहाँ भोज पर, जब सम्राट की सेहत के लिए जाम पिये जा रहे थे, काउंट ने अर्ज़रूम के अभियान का ऐलान किया। शाम के पाँच बजे फ़ौजे निकल भी पड़ीं।

26 जून को हम अर्ज़रूम से पाँच मील दूर पहाड़ों में थे। इन पहाड़ों को अक-दाग़ (सफ़ेद पहाड़) कहते हैं; वे खड़िया के हैं। सफ़ेद और रपटीली धूल से आँखों में दर्द हो रहा था; उनका ग़मगीन नज़ारा दिल में उदासी पैदा कर रहा था। अर्ज़रूम की नज़दीकी का एहसास और इस अभियान के ख़त्म होने का यक़ीन हमें कुछ तसल्ली दे रहा था।

शाम को काउंट पास्केविच आसपास की जगह का निरीक्षण करने निकला। तुर्क घुड़सवार, जो पूरे दिन हमारी चौकियों के सामने चक्कर लगा रहे थे, उन्होंने उस पर गोलियाँ वरसाना शुरू कर दिया। काउंट ने, जनरल मुराव्योव से सलाह-मशविरा जारी रखते हुए, उन्हें कई बार कोड़ों से धमकाया। उनकी गोलियों का जवाब नहीं दिया गया।

इस बीच अर्ज़रूम में भगदड़ मच गयी। सेराक्सीर ने, जो अपनी पराजय के बाद भागकर शहर में आ गया था, रूसियों की सम्पूर्ण पराजय की अफ़वाह फैला दी। उसके पीछे-पीछे आज़ाद किये गये क़ैदियों ने निवासियों को काउंट पास्केविच का सन्देश सुनाया। भगोड़ों ने सेराक्सीर का झूठ पकड़ लिया। जल्दी ही रूसियों के शीघ्र आगमन की ख़बर भी मिल गयी। लोग आत्मसमर्पण की बात करने लगे। सेराक्सीर और फ़ौजों ने मुक़ाबला करने का विचार किया। बग़ावत हो गयी। क्रुद्ध भीड़ द्वारा कुछ फ्रांसीसी मार डाले गये।

हमारे कैम्प में (26 की सुबह) प्रजा और सेराक्सीर के प्रतिनिधि आये, दिन

---

1. साझेन–दूरी नापने की इकाई जो क़रीब तीन गज (2.13 मीटर) के बराबर होती है।
2. नार्ज़ान–उत्तरी काफ़काज़ में खनिज जल का सोता, जल को भी इसी नाम से पुकारा जाता है।

बातचीत में बीता, शाम के पाँच बजे नुमाइन्दे अर्ज़रूम की ओर चले, उनके साथ थे जनरल राजकुमार बेकोविच, जो एशियाई ज़ुबानें और तौर-तरीक़े अच्छी तरह जानते थे।

दूसरे दिन सुबह हमारी फ़ौज आगे बढ़ी। अर्ज़रूम की उत्तरी दिशा में, तोप-दाग़ की चोटी पर तुर्की तोपख़ाना था। फ़ौजें उस ओर बढ़ीं, तुर्की गोलों की दनदनाहट का जवाब नगाड़ों और संगीत से देते हुए। तुर्क भाग गये और तोप-दाग़ पर हमारा क़ब्ज़ा हो गया। मैं वहाँ कवि युसिफोविच के साथ पहुँचा। छोड़े गये तोपख़ाने के पास हमें काउंट पास्केविच अपने पूरे तामझाम के साथ दिखाई दिया। पहाड़ की ऊँचाई से घाटी में दिखाई दिया अर्ज़रूम, अपने क़िले, मीनारों, हरी-हरी छतों समेत, जो एक-दूसरे पर जमाई गयी थीं। काउंट घोड़े पर था। उसके सामने ज़मीन पर तुर्की प्रतिनिधि, जो शहर की चाबियाँ लाये थे, बैठे थे मगर अर्ज़रूम में परेशानी का माहौल था। अचानक शहर के परकोटे पर आग चमकी, धुआँ उठा, और गोले उड़े तोप-दाग़ की ओर। उनमें से कुछ तो काउंट पास्केविच के सिर के ऊपर से गुज़र गये।

"देखिये कैसे हैं ये तुर्क," ...उसने मुझसे कहा, "इनका कभी भरोसा नहीं किया जा सकता।"

इसी समय राजकुमार बेकोविच, जो बातचीत के दौरान कल से अर्ज़रूम में ही था, तोप-दाग़ पर घोड़ा दौड़ाता हुआ आया।

उसने बतलाया कि सेराक्सीर और प्रजा तो कब से आत्मसमर्पण के पक्ष में है मगर कुछ अनुशासनहीन अर्नाऊत[1] तोपची—पाशा के नेतृत्व में शहर के तोपख़ाने पर क़ब्ज़ा करके विद्रोह कर रहे हैं। जनरल काउंट के पास आये और उनसे तुर्की तोपख़ाने की मुँह बन्द करने की इजाज़त माँगी। अर्ज़रूम के प्रभावशाली व्यक्तियों ने भी, जो अपने ही गोलों की आग के नीचे बैठे थे, इसका समर्थन किया। काउंट कुछ देर तक टालता रहा; आख़िरकार उसने इजाज़त दे दी, यह कहते हुए कि, "उनकी बेवक़ूफ़ी की इन्तेहा हो गयी!" फ़ौरन तोपें लाई गयीं, गोले दागे जाने लगे और दुश्मनों के गोले धीरे-धीरे ख़ामोश हो गये। हमारी फ़ौजें अर्ज़रूम की ओर चल पड़ीं और 27 जून को, पल्तावा के युद्ध की वर्षगाँठ पर, शाम को छह बजे अर्ज़रूम के क़िले पर रूसी झंडा फहराने लगा।

रायेव्स्की शहर में गया—मैं उसके साथ चल पड़ा, हम शहर में दाख़िल हुए, जो बड़ी अजीब-सी तस्वीर पेश कर रहा था। तुर्क अपनी समतल छतों से हमारी ओर बड़ी गम्भीरता से देख रहे थे। आर्मेनियाई सँकरे रास्तों पर शोर मचाते हुए जमा हो रहे थे। उनके बच्चे हमारे घोड़ों के सामने दौड़ रहे थे, सलीब का निशान बनाते दुहरा रहे थे : "ईसाई! ईसाई...!" हम क़िले की ओर चले, जिसमें हमारा तोपख़ाना जा रहा था; बड़े

---

1. अर्नाऊत : अल्बानियाइयों को तुर्क इस नाम से पुकारते थे।

ताज्जुब से मैंने वहाँ अपने आर्तेमी को देखा, जो शहर में सैर-सपाटे कर रहा था, बग़ैर उस कठोर आदेश की ओर ध्यान दिये, जिसमें कहा गया था कि वग़ैर ख़ास इज़ाज़त लिए कोई छावनी छोड़कर कहीं न जाए।

शहर की सड़कें सँकरी और टेढ़ी-मेढ़ी हैं। घर काफ़ी ऊँचे हैं। लोग बड़ी तादाद में थे—दुकानें वन्द थीं। शहर में क़रीब दो घंटे विताने के बाद मैं छावनी में लौट आया; सेराक्सीर और वन्दी वनाये गये चारों पाशा वहाँ मौजूद थे। पाशाओं में से एक, सूखा-सा वूढ़ा, बेहद बातूनी, बड़ी ज़िन्दादिली से हमारे जनरलों से कुछ कह रहा था। मुझे फ्रॉक कोट में देखकर उसने पूछा कि मैं कौन हूँ। पुश्शिन ने मुझे शायर का ख़िताब दिया। पाशा ने सीने पर हाथ रखकर मुझे झुककर सलाम किया, दुभाषिये की मदद से यह कहते हुए : "बड़ी मुवारक है वह घड़ी, जब मिलते हैं शायर से। शायर भाई है दरवेश का। उसका न तो कोई ख़ानदान होता है, न ही भाई बन्द; जब हम ग़रीब परेशान होते हैं नाम के लिए, हुकूमत के लिए, दौलत के लिए, वह खड़ा रहता है धरती के बादशाहों की बराबरी से और लोग उसे सलाम करते हैं।"

पाशा का यह पूरबी स्वागत हम सबको बहुत अच्छा लगा। मैं सेराक्सीर को देखने गया। उसके तम्बू में घुसते समय मैंने उसके माशूक़ छोकरे, काली आँखोंवाले चौदह बरस के लड़के को देखा, जो अर्नाऊती क़ीमती पोशाक पहने था। सेराक्सीर, सफ़ेद बालोंवाला बूढ़ा, साधारण चेहरे-मोहरेवाला, गहरे ख़यालों में खोया बैठा था। उसके नज़दीक हमारे अफ़सरों की भीड़ थी। उसके तम्बू से बाहर निकलते हुए मैंने अधनंगे नौजवान को देखा जो भेड़ की ख़ाल की टोपी पहने था, एक हाथ में मोटा डंडा लिए, कन्धों पर रोएँदार ख़ाल डाले। वह ज़ोर-ज़ोर से चीख़ रहा था। मुझे बताया गया कि वह मेरा भाई दरवेश था जो विजेताओं को सलाम करने आया था। उसे ज़बर्दस्ती वहाँ से भगाया गया।

5

अर्ज़रूम (जिसे ग़लती से अर्ज़ेरूम, एर्जरूम, एर्जरोन कहते हैं) की स्थापना लगभग सन् 415 में हुई, फ्योदोसी द्वितीय के शासनकाल में और उसे फ्योदोसीओपोल कहा जाता था। उसके नाम से सम्बन्धित कोई भी ऐतिहासिक संस्मरण नहीं है। मुझे उसके बारे में बस इतना पता चला कि गाजीबाबा[1] के कथानुसार किसी अपमान का बदला

---

1. गाजीबाबा—अंग्रेज़ी लेखक मोरियेर के उपन्यास 'इस्पानी गाजीबाबा के कारनामे का एक चरित्र' (1824-1828) यहां उस वाकये का ज़िक्र किया जा रहा है, जब पर्शियन राजदूत ने अर्ज़रूम से गुज़रते हुए उसका सामान चोरी करनेवाले, उसके साथ-साथ दौड़नेवाले सेवक को पकड़कर →

चुकाने के लिए यहाँ पर्शिया के राजदूत को इन्सान के कानों के बदले बकरी के कान भेंट किये गये थे। अर्ज़रूम एशियाई तुर्की का प्रमुख शहर है। उसकी जनसंख्या एक लाख बताई जाती है, मगर शायद यह बढ़-चढ़कर कहा गया है। यहाँ घर पत्थरों के हैं, छतें घास-फूस से ढँकी हैं, जिसके कारण ऊँचाई से देखने पर शहर बड़ा अजीब प्रतीत होता है।

यूरोप और पूरब के बीच ज़मीन के रास्ते से होनेवाला प्रमुख व्यापारी माल अर्ज़रूम से भेजा जाता है। मगर शहर में माल बहुत ही कम बेचा जाता है : उसे यहाँ खोला ही नहीं जाता, इस बात पर तुर्नफोर ने भी ग़ौर किया था, जो लिखता है कि अर्ज़रूम में एक चम्मच रूबार्ब[1] मिलना सम्भव न होने से मरीज़ मर सकता है, जबकि उसकी कई बोरियाँ शहर में पड़ी होती हैं।

'एशियाई शानोशौकत' से बढ़कर कोई और निरर्थक शब्द-रचना मुझे मालूम नहीं। शायद यह मुहावरा ईसाइयों के अभियान के समय जन्मा होगा, जब ग़रीब बाँके लड़ाकू जवान अपने महलों की नंगी दीवारें और बलूत की कुर्सियाँ छोड़कर आये और पहली बार उन्होंने देखे लाल दीवान, भड़कीले क़ालीन और रंग-बिरंगे पत्थर जड़ी-मूठोंवाले खंजर। आज तो कहना पड़ेगा; एशियाई ग़रीबी, एशियाई कमीनापन वग़ैरह, मगर शानोशौकत तो यूरोप की थाती है। अर्ज़रूम में मुँहमाँगी क़ीमत देकर भी वह चीज़ नहीं ख़रीदी जा सकती, जो प्स्कोव प्रान्त के क़स्बाई शहर की छोटी-से-छोटी दुकान में भी मिल जाती है।

अर्ज़रूम की आबोहवा सेहत के लिए अच्छी नहीं है। शहर समुद्र से सात हज़ार फ़ीट की ऊँचाई पर एक ढलान पर बसा है। इसे घेरनेवाले पहाड़ साल के ज़्यादातर दिनों में बर्फ़ से ढँके रहते हैं। धरती पर जंगल नहीं हैं, मगर वह उपजाऊ है। वह अनेक सोतों द्वारा सींची जाती है और पानी के नलों से अटी पड़ी है। अर्ज़रूम अपने पानी के लिए मशहूर है। येफ्रात शहर से सिर्फ़ तीन मील की दूरी पर बहती है। मगर हर जगह बहुत सारे फ़व्वारे हैं। हरेक के पास ज़ंजीर से बँधा लोहे का मग्गा होता है और भले मुसलमान पीते जाते हैं और तारीफ़ करते नहीं थकते। लकड़ी सगान-लू से लायी जाती है।

अर्ज़रूम के शस्त्रागार में हमें अनेक पुराने हथियार मिले—शिरस्त्राण, ढालें, तलवारें, जो शायद गॉडफ्रेड के ज़माने से ही ज़ंग खा चुकी थीं। मस्जिदें नीची और अँधेरी। शहर के बाहर क़ब्रिस्तान है। स्मारक अक्सर खम्भों जैसे हैं, जिन पर पत्थर का टोप बना है। दो तीन पाशाओं की क़ब्रें कुछ हटकर थीं, मगर उनमें कलात्मकता

→ उसके कान काटने की आज्ञा दी। नौकरों ने राजदूत को धोखा देकर आदमी के कानों के बदले बकरी के कान पेश कर दिये।

1. रूबार्ब (रेवत—चीनी) एक लता विशेष, जिसके काढ़े से दवा आदि बनाई जाती है।

ज़रा भी नहीं थी; कोई पसन्द कोई विचार...कुछ भी नहीं...एक मुसाफ़िर लिखता है कि एशिया के सारे शहरों में से सिर्फ़ अर्ज़रूम में ही उसने घंटाघर देखा, जिसकी घड़ी ख़राब हो चुकी थी।

सुल्तान द्वारा लाये गये नये क़ायदे अभी तक अर्ज़रूम में पहुँचे नहीं थे। सेनाएँ अभी अपनी रंग-बिरंगी पूरबी पोशाक ही पहनती हैं। अर्ज़रूम और कोन्स्तान्तिनोपोल में प्रतिद्वन्द्विता चलती है, ठीक वैसी ही जैसी कज़ान और मॉस्को के बीच है। यह रहीं एक व्यंग्यात्मक कविता की आरम्भिक पंक्तियाँ जिन्हें विशेष तुर्की पैदल सेना के अमीन-ओग्लू[1] ने लिखा है :

पूजते हैं काफ़िर आज स्ताम्बूल को
मगर मारेंगे, ठोकरें कल
जैसे दबायें सोये नाग को,
बढ़ जायेंगे आगे—यूँ ही उसे छोड़कर।
सो रहा दुर्भाग्य से पूर्व स्ताम्बूल
मुख मोड़ा स्ताम्बूल ने पैगम्बर से;
पुरातन उसके पूरबी सच को
कर दिया मलिन धूर्त पश्चिम ने।
पाप की मिठास की ख़ातिर स्ताम्बूल ने
दग़ा किया नमाज़ और तलवार से।
भूल गया स्ताम्बूल युद्ध का पसीना
पीता शराब इबादत की घड़ी में।

विश्वास की पाक अगन है बुझ गयी उसमें
बीवियाँ जायें उसमें क़ब्रिस्तानों में,
चौराहों पर भेजते वृद्धाओं को,
और बुलातीं वे मर्दों को हरम में
सोता रिश्वतख़ोर हिजड़ा।

मगर नहीं है ऐसा पहाड़ी अर्ज़रूम;
कई रास्तों वाला हमारा अर्ज़रूम,
सोते नहीं है हम शर्मनाक शानोशौकत में,
पीते नहीं मदमस्त प्याले से
शराब में जो है दुराचारिता, आग और शोरोगुल
रखें रोज़ा : संजीदगी से

---

1. अमीन ओग्लू—काल्पनिक पात्र है। कविता वास्तव में पूश्किन द्वारा लिखी गयी है।

पियें आबे-हयात;
बेख़ौफ़ और ख़ुशी से झूमते,
जंग में जाते बाँके जवान।
हमारे हरमों तक कोई न पहुँचे,
हिजड़े हैं ज़ालिम न हैं रिश्वतख़ोर,
बैठें बीवियाँ वहाँ सुकून से।

सेराक्सीर के महल में मैं उन कमरों में रहा, जहाँ हरम था। पूरे दिन मैं अनगिनत रास्तों से गुज़रता रहा : एक कमरे से दूसरे कमरे में, एक छत से दूसरी छत पर, एक सीढ़ी से दूसरी सीढ़ी पर। महल लूटा-खसोटा गया प्रतीत हो रहा था; सेराक्सीर भागते-भागते जो भी ले जा सकता था, ले गया। दीवान नंगे पड़े थे, कालीन निकाल लिए गये थे। जब मैं शहर में घूमता तो तुर्क मुझे बुलाकर ज़बान दिखाया करते। (वे हर विदेशी को डॉक्टर समझते।) इससे मैं उकता गया, मैं भी इसका जवाब उसी तरह देने को तैयार था। शामें मैं ज़हीन और प्यारे सूखोरुकोव[1] के साथ गुज़ारा करता, हमारे पेशों की समानता हमें नज़दीक ले आयी। वह मुझे अपनी साहित्यिक धारणाओं के बारे में बताता, अपनी ऐतिहासिक खोजों के बारे में बातें करता, जिन्हें उसने इतनी लगन से और सफलतापूर्वक आरम्भ किया था। उसकी इच्छाओं और माँगों की छोटी-सी सीमा दिल को छू लेती है। अफ़सोस होगा, अगर वे पूरी नहीं होंगीं।

सेराक्सीर का महल मुसलसल ज़िन्दादिली की तस्वीर पेश कर रहा था, वहाँ जहाँ गम्भीर पाशा अपनी बीवियों और अनगिनत औलादों के बीच ख़ामोशी से बैठकर हुक़्क़ा पिया करता, वहाँ उसे पराजित करनेवाला अपने जनरलों की जीत के समाचार पा रहा था, पुरस्कार बाँट रहा था, मुहब्बत के नये क़िस्सों के बारे में बातें कर रहा था। मूश का पाशा काउंट पास्केविच के पास आकर अपने भतीजे के लिए जगह की प्रार्थना करने लगा। महल में चलते हुए यह प्रभावशाली तुर्क एक कमरे में रुका, ज़ोर-ज़ोर से कुछ शब्द बोलने के बाद सोच में डूब गया; इसी कमरे में सेराक्सीर के आदेश पर उसके पिता का सिर काट दिया गया था। ये है असली पूरबी असर! मशहूर बेय बुलात[2], कॉकेशस की बिजली, चेर्केसी गाँवों के दो नेताओं के साथ आया, जो पिछली लड़ाइयों के दौरान काफ़ी अप्रसन्न थे। उन्होंने काउंट पास्केविच के यहाँ भोजन किया। बेय बुलात पैंतीस साल का आदमी, छोटे क़द और चौड़े कन्धोंवाला

---

1. सूखारुकोव—वासीलि दिमित्रियेविच (1795-1841) अफ़सर, दिसम्बर क्रान्तिकारियों से उसके घनिष्ठ सम्बन्ध थे, दोन की कज़ाक सेनाओं के बारे में सामग्री एकत्रित कर रहा था।
2. बेय बुलात—कॉकेशस की विद्रोही पहाड़ी जनजातियों का सरगना, जो 1829 रूसियों के पक्ष में शामिल हो गया था।

था। वह रूसी में नहीं बोलता, या यूँ दिखाता है कि नहीं बोलता। अर्ज़रूम में उसके आगमन से मुझे बड़ी ख़ुशी हुई : पहाड़ों और कवार्दा से होकर सही सलामत जाने में उसकी बड़ी मदद मिली।

अर्ज़रूम के निकट बन्दी बनाये गये और सेराक्सीर के साथ तिफ़्लिस भेजे गये उसमान पाशा ने काउंट पास्केविच से अर्ज़रूम में छोड़े गये अपने हरम की हिफ़ाज़त करने की प्रार्थना की। शुरू के दिनों में उसके बारे में हम क़रीब-क़रीब भूल ही गये थे। एक बार खाना खाते समय दस हज़ार फ़ौजियों के मौजूद रहने के बावजूद मुसलमानी शहर की ख़ामोशी के बारे में बातें करते हुए, जहाँ एक भी बाशिन्दे ने किसी भी सिपाही के अत्याचार की शिकायत नहीं की थी, काउंट को उसमान पाशा के हरम की याद आयी और उसने अब्रामोविच महाशय को पाशा के घर जाकर उसकी बीवियों से यह पूछने की आज्ञा दी कि वे ख़ुश हैं या नहीं, और उन्हें किसी तरह की तकलीफ़ तो नहीं है। मैंने म.अ. के साथ जाने की इजाज़त माँगी। हम चल पड़े। म.अ. ने अपने साथ रूसी अफ़सर को दुभाषिये के रूप में लिया, जिसकी कहानी बड़ी अजीब है। अठारह वर्ष की उम्र में वह पर्शियनों द्वारा क़ैद कर लिया गया। उसका जननांग काट डाला गया और वह बीस वर्ष से भी अधिक समय से पाशा के लड़कों में से एक के हरम में हिजड़े का काम कर रहा है। उसने अपने दुर्भाग्य की कहानी, पर्शिया में अपने वास्तव्य की कहानी, दिल को छू लेनेवाली सादगी से बतलाई। शारीरिक दृष्टि से उसके द्वारा बताये गये तथ्य महत्त्वपूर्ण थे।

हम उसमान पाशा के घर तक आये। हमें एक खुले कमरे में ले जाया गया, जो बड़े क़रीने से सजाया गया था। रंगीन खिड़कियों के ऊपर कुरान शरीफ़ की आयतें लिखी गयी थीं। उनमें से एक मुझे मुसलमानी हरम के लिए बड़ी पेचीदा-सी लगी : *तुझे होगा जोड़ना और तोड़ना*। हमारे लिए चाँदी के प्यालों में कॉफ़ी लाई गयी। गरिमायुक्त सफ़ेद दाढ़ीवाले एक बुज़ुर्ग, उसमान पाशा के पिता, बीवियों की ओर से काउंट पास्केविच का शुक्रिया अदा करने आये—मगर म. अ. ने साफ़-साफ़ कह दिया कि उसे उसमान पाशा की बीवियों के पास भेजा गया है और वह उनसे मिलना चाहता है, जिससे कि ख़ुद उनसे यह जान सके कि अपने पति की अनुपस्थिति में वे हर चीज़ से सन्तुष्ट हैं। पर्शियन क़ैदी ने इस सबका अनुवाद किया ही था कि बुज़ुर्ग ने अप्रसन्नता से ज़बान से 'टच् टच्' करते हुए कहा कि वह हमारी इस माँग से किसी भी हालत में सहमत नहीं हो सकता और अगर पाशा को, अपनी वापसी पर, पता चलेगा कि पराये मर्दों ने उसकी बीवियों को देखा है, तो उसका, बूढ़े का, और हरम के सभी सेवकों का सिर क़लम करने का हुक्म दे देगा। सेवकों ने, जिनके बीच एक भी हिजड़ा नहीं था, बूढ़े के शब्दों का समर्थन किया, मगर म.अ. टस-से-मस नहीं हुआ।

"आप अपने पाशा से डरते हैं?" उसने उनसे कहा, "और मैं अपने सेराक्सीर से, और मैं उसकी आज्ञा की अवहेलना नहीं कर सकता।"

कोई चारा न था। हमें बग़ीचे से होकर ले जाया गया, जहाँ दो मरियल फ़व्वारे थे। हम पत्थरों की छोटी-सी इमारत के पास आये। बूढ़ा हमारे और दरवाज़े के बीच खड़ा हो गया, सावधानी से उसे खोला, हाथों से ब्योंडा थामे हुए और हमने सिर से पीले जूतों तक सफ़ेद चादर से ढँकी एक औरत को देखा। हमारे दुभाषिये ने अपना सवाल दुहराया : हमने सत्तर साल की बुढ़िया की अस्पष्ट बातें सुनीं; म.अ. ने उसे रोका।

"यह पाशा की माँ है।" उसने कहा—"मुझे बीवियों के पास भेजा गया है, उनमें से एक को लाइये। सभी काफ़िर के अनुमान से चकित रह गये; बुढ़िया चली गयी और एक मिनट बाद एक औरत के साथ आयी, जो उसी तरह आवृत्त थी जैसी कि वह स्वयं थी। घूँघट के पीछे से प्यारी युवा आवाज़ फूटी। उसने काउंट को दुःखी विधवाओं की ओर ध्यान देने के लिए धन्यवाद दिया और रूसियों के व्यवहार की प्रशंसा की।

म.अ. के पास उससे बातचीत जारी रखने की कला थी। इसी बीच मैंने अपनी चारों ओर नज़र दौड़ाते हुए अचानक दरवाज़े के ठीक ऊपर एक गोल खिड़की देखी और देखे उस गोल खिड़की में उत्सुक काली आँखोंवाले पाँच-छह गोल सिर। मैं अपनी खोज के बारे में म.अ. को बताने ही वाला था, मगर सिर झुकते रहे, आँख मारते रहे और कुछ उँगलियाँ मुझे धमकाने लगीं, यह जताते हुए कि मैं ख़ामोश रहूँ। मैं मान गया और अपनी खोज के बारे में किसी से नहीं कहा। वे सभी चेहरों से प्यारी लग रही थीं, मगर उनमें से एक भी सुन्दर नहीं थी, वह जो दरवाज़े के पास म.अ. से बातें कर रही थी, शायद हरम की प्रमुख थी, दिलों की दौलत, प्यार का गुलाब—कम-से-कम मैंने ऐसी कल्पना की।

आख़िर म.अ. ने जवाबतलबी ख़त्म की। दरवाज़ा बन्द हो गया। खिड़की के चेहरे भी ग़ायब हो गये। हमने बाग़ और घर देखा और अपनी दूतगिरी से ख़ुश होकर वापस लौटे।

इस तरह मैंने हरम देखा : यह सौभाग्य बिरले यूरोपवासी को ही प्राप्त होता था। यह रही किसी पूरबी उपन्यास के लिए पृष्ठभूमि।

लड़ाई ख़त्म हो गयी लगती थी। मैं वापसी की तैयारी करने लगा 14 जुलाई को मैं सार्वजनिक हम्माम में गया और मुझे ज़िन्दगी से बड़ी कोफ़्त हुई। मैंने गन्दी चादरों, घटिया सेवा वग़ैरह के लिए गालियाँ दीं। अर्ज़रूम के और तिफ़्लिस के हम्मामों में मुक़ाबला कैसे किया जा सकता है!

महल में लौटने पर पहरा दे रहे कोनोन्चिलिन से पता चला कि अर्ज़रूम में हैज़ा फैल रहा है। करांटीन की सभी भयानकताओं की तस्वीर मेरे सामने खिंच गयी और

मैंने उसी दिन फ़ौज छोड़ने का इरादा कर लिया। आदत न होने से हैज़े की मौजूदगी का ख़याल बड़ा अप्रिय लगा। इस असर को ठीक-ठाक करने के लिए मैं बाज़ार में घूमने चला गया। हथियार बनाने में निपुण लुहार की दुकान के सामने रुककर मैं कोई एक खंजर देखने लगा कि तभी किसी ने अचानक मेरे कन्धे पर मारा। मैंने मुड़कर देखा : मेरे पीछे एक भयानक भिखारी खड़ा था। वह मौत की तरह सफ़ेद था; लाल-लाल सूजी हुई आँखों से आँसू बह रहे थे। मेरे दिमाग़ में फिर से हैज़े का ख़याल कौंध गया। मैंने भिखारी को एक अबूझ तिरस्कार की भावना से दूर धकेल दिया और बड़ी अप्रसन्नता से अपनी सैर से वापस लौटा।

मगर उत्सुकता ने फिर से सिर उठाया; दूसरे दिन मैं डॉक्टर के साथ उस तम्बू में गया, जहाँ हैज़े के मरीज़ पड़े थे। मैं घोड़े से नहीं उतरा और सावधानी बरतते हुए हवा की दिशा में खड़ा हो गया। तम्बू में से एक मरीज़ को बाहर लाया गया; वह एकदम विवर्ण-सा था और शराबी की तरह लड़खड़ा रहा था। दूसरा मरीज़ बेहोश पड़ा था। हैज़ा पीड़ित मरीज़ को देखकर और उसे जल्दी ही अच्छा होने का दिलासा देकर, मैंने उन दो तुर्कों पर ध्यान दिया, जो उसे हाथों का सहारा देकर बाहर लाये, उसके कपड़े उतारे, नब्ज़ देखी, जैसे कि हैज़ा जुकाम की तरह है। मानता हूँ कि इस उदासीनता को देखकर मुझे अपनी यूरोपियन भीरुता पर शर्म आयी और मैं फ़ौरन शहर लौट आया।

19 जुलाई को काउंट पास्केविच से विदा लेने आया तो मैंने उसे बड़ा दुःखी पाया। शोक समाचार प्राप्त हुआ था कि जनरल बुर्त्सोव बायबुर्त के निकट मारा गया है। वीर बुर्त्सोव के लिए मुझे बड़ा दुःख हुआ, मगर यह घटना हमारी छोटी-सी फ़ौज के लिए, जो अनजान धरती पर गहरे पैठ गयी थी और असफलता की ख़बर पाते ही विद्रोह करने पर उतारू दुश्मनों से घिरी हुई थी, आत्मघाती हो सकती थी।

इस तरह, लड़ाई दुबारा शुरू हो रही थी! ग्राफ़ ने मुझे आगामी आक्रमणों का गवाह बनने का सुझाव दिया। मगर मुझे रूस जाने की जल्दी थी...ग्राफ़ ने यादगार के तौर पर मुझे तुर्की तलवार भेंट की। वह मैंने सँभाल कर रखी है, अप्रतिम 'हीरो' के पीछे-पीछे अर्ज़रूम के जीते गये वीरान इलाक़ों की यात्रा की याद में। उसी दिन मैंने अर्ज़रूम छोड़ दिया।

मैं परिचित मार्ग से वापस तिफ़्लिस आया। वे जगहें जो कुछ ही दिन पहले पन्द्रह हज़ार सैनिकों की उपस्थिति से सजीव हो गयी थीं, अब ख़ामोश और दयनीय लग रही थीं। मैंने सगान-लू पार किया और बड़ी मुश्किल से उस जगह को पहचान पाया जहाँ हमारी सेना का लश्कर था। गुम्रा में मैंने तीन दिनों का करांटीन सहा। फिर से मैंने देखा बेज़अब्दाल और ठंडे अर्मोनिया के ऊँचे समतल मैदानों को गर्म जॉर्जिया की ख़ातिर छोड़ा। मैं तिफ़्लिस पहुँचा पहली अगस्त को। यहाँ मैं कुछ दिनों तक प्यारे और ख़ुशमिज़ाज समाज के बीच रहा। कुछ शामें जॉर्जियन संगीत और गीतों की ध्वनि

के बीच बाग़ों में बिताई। मैं आगे चला। पहाड़ों से मेरा सफ़र यादगार रहा, क्योंकि कोवी के निकट रात को मुझे तूफ़ान ने पकड़ लिया। सुबह कज़बेक के नज़दीक से जाते हुए मुझे आश्चर्यजनक नज़ारा दिखाई दिया। सफ़ेद बिखरे-बिखरे बादल पहाड़ की चोटी से फैल रहे थे और सुनसान मॉनेस्ट्री सूरज की किरणों से आलोकित, हवा में तैरती प्रतीत हो रही थी, जिसे बादल उठा ले जा रहे थे। क्रुद्ध बाल्का भी अपने विराट रूप में मुझे नज़र आया : बारिश के पानी से भर गयी खाई अपने भयानक गर्जन से तेरेक को भी मात दे रही थी। किनारे कट गये थे, विशाल पत्थर अपनी जगह से हट गये थे, और बहाव को रोक रहे थे। अनेकों ओसेतिन रास्ते की मरम्मत कर रहे थे। मैं सही-सलामत वहाँ से पार हो गया। आख़िर मैं तंग दर्रे से निकलकर वोल्शाया कबार्द के चौड़े खुले मैदानों में पहुँचा। व्लादीकाफ़काज में मुझे दोरोखोव और पुश्शिन मिले। दोनों इस युद्ध में खाये ज़ख़्मों के इलाज के लिए औषधि वाले झरनों की ओर जा रहे थे। पुश्शिन की मेज़ पर मुझे रूसी पत्रिकाएँ दिखाई दीं। पहला लेख, जिस पर मेरी नज़र पड़ी, मेरी एक रचना की समीक्षा थी। उसमें मुझे और मेरी कविताओं को दिल खोलकर गालियाँ दी गयी थीं। मैं उसे ज़ोर से पढ़ने लगा। पुश्शिन ने मुझे यह ज़िद करते हुए रोक दिया कि मैं नक़ल उतारने के अन्दाज़ में पढ़ूँ। यह जानना उचित होगा कि समीक्षा हमारे आलोचकों की आम क्लिष्टताओं से सुसज्जित थी : यह थी एक बातचीत जो गिरजाघर के अधिकारी, प्रार्थना के लिए सफ़ेद डबल रोटी पकानेवाली औरत और प्रिंटिंग प्रेस के प्रूफ़ रीडर के बीच हो रही थी, जो इस छोटी-सी हास्य नाटिका का विश्लेषण कर रहा था। पुश्शिन की ज़िद मुझे इतनी दिलचस्प लगी कि पत्रिका के लेख को पढ़कर जो अप्रसन्नता मुझ पर छा गयी थी, बिलकुल ग़ायब हो गयी और हम सच्चे दिल से ठहाके लगाने लगे।

ऐसा था प्रिय समाज में मेरा पहला स्वागत!